ISSN NO. 0971-8443

बाल भारती

अप्रैल 2019 मूल्य : ₹ 15

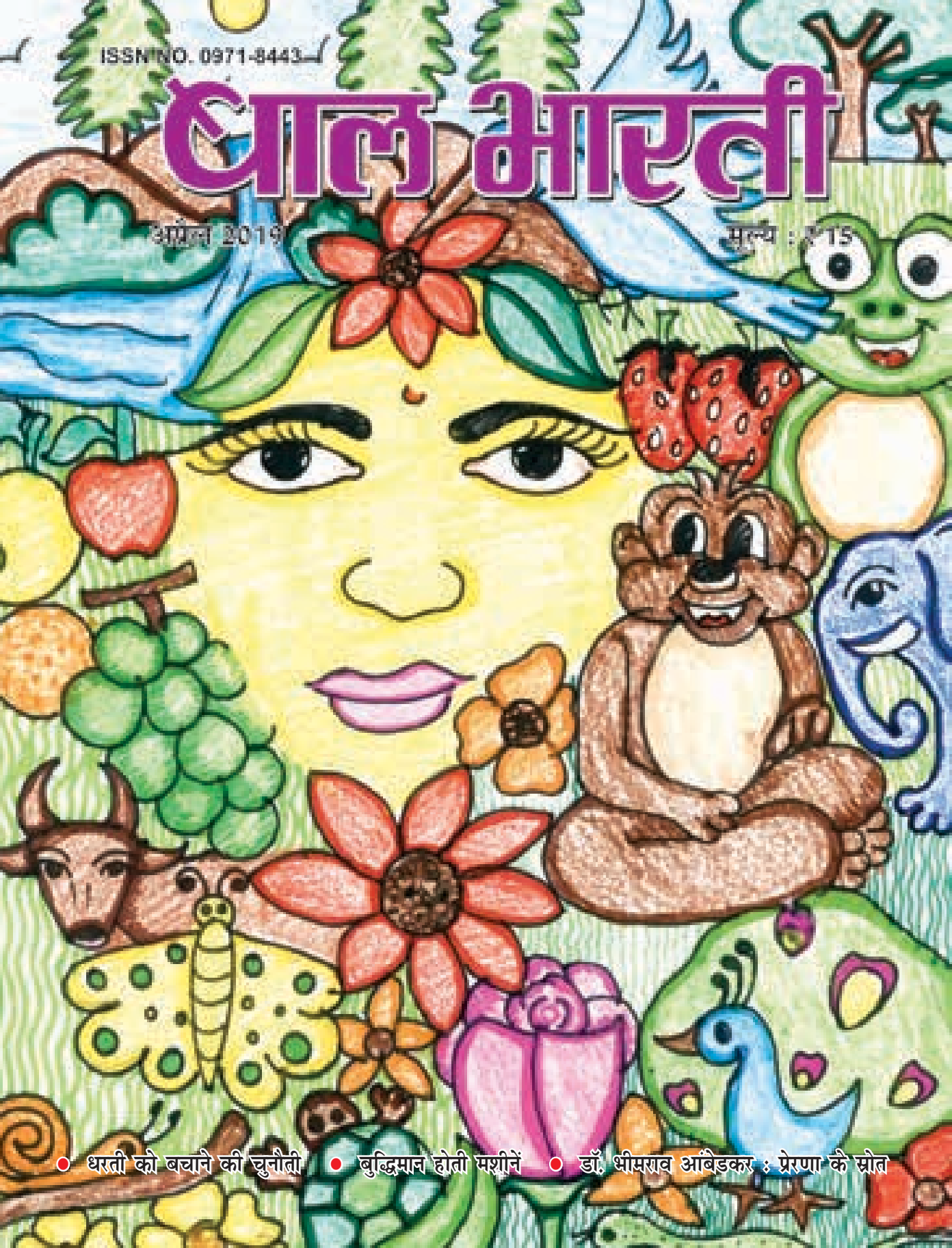

- धरती को बचाने की चुनौती
- बुद्धिमान होती मशीनें
- डॉ. भीमराव आंबेडकर : प्रेरणा के स्रोत

हमारे नए प्रकाशन

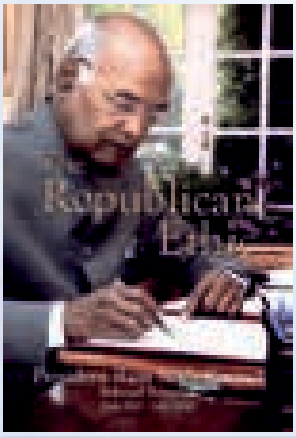

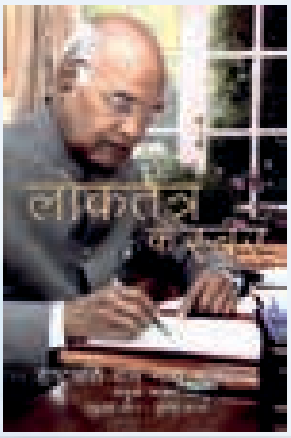

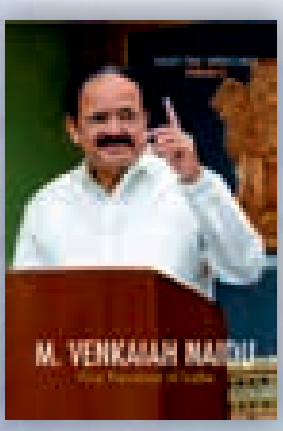

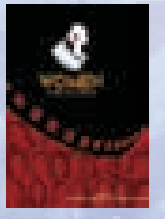

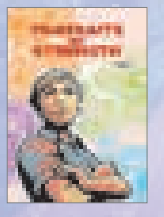

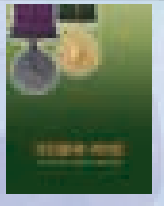

प्रकाशन विभाग

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली -110003
वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

ऑर्डर के लिए संपर्क करें :
फोन : 011-24367260, 24365610
ई-मेल : businesswng@gmail.com
हमारी पुस्तकें ऑनलाइन खरीदने के लिए
कृपया www.bharatkosh.gov.in पर जाएं।
चुनिंदा ई-बुक एमेज़ॉन और गूगल प्ले पर उपलब्ध।

Follow us on twitter @ DPD_India

बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

बाल भारती

1948 से प्रकाशित

वर्ष 71 : अंक : 11 पृष्ठ : 56 | चैत्र-वैशाख 1941 | अप्रैल 2019

लेख

धरती को बचाने की चुनौती	मंजू चौहान	16
डॉ. भीमराव आंबेडकर : प्रेरणा के स्रोत	डब्ल्यू.एन.कुबेर	24
बुद्धिमान होती मशीनें	डॉ. विनोद गुप्ता	34

कहानियां

हनी, मनी और सनी	राकेश 'चक्र'	6
बच्चों का ज्ञानालय	राज शेखर	9
नायाब नसीहत	चैतन्य	13
स्वास्थ्य: जीवन की सबसे बड़ी पूंजी	मनीषा गुप्ता	20
ईमानदारी	मुकेश शेषमा	26
सही राह	नयन कुमार राठी	38
यमराज आए ट्रैफिक संभालने	ऋषि मोहन श्रीवास्तव	45
शनल किसी से कम नहीं	चित्रलेखा अग्रवाल	49

कविताएं

वन है तो जल है	उमेश वाघेला	8
नानी-नानी	मुनटुन राज	27
बेटियां		52

माह की कविता

मंगल-आह्वान	रामधारी सिंह दिनकर	28

उपन्यास

पिंकू के कारनामे	41
चित्रकथा	30-33

वरिष्ठ संपादक : **राजेंद्र भट्ट**

संपादक : **आभा गौड़**

दूरभाष : 011-24362910

व्यापार व्यवस्थापक

ई-मेल : *pdjucir@gmail.com*

दूरभाष : 011-24367453

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : **वी. के. मीणा**

आवरण : **युवराज सिंह ठाकुर**, (*हरी-भरी पृथ्वी*, चित्र बनाओ प्रतियोगिता के विजेता), एसवीपीएस स्कूल, गुलबर्ग, कर्नाटक

चित्रांकन : **प्रज्ञा उपाध्याय, शिवानी, गुंजन द्विवेदी**

ई-मेल : *balbharti1948@gmail.com*

वेबसाइट : *www.publicationsdivision.nic.in*

फेसबुक पेज : *www.facebook.com/publicationsdivision*

संपादकीय पत्र व्यवहार का पता :

संपादक 'बाल भारती', कमरा नं- 645, छठा तल, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

हमारी बात

बच्चो! बचपन से ही विज्ञान के पहले अध्याय से हम पारिस्थितिक संतुलन के बारे में पढ़ते आए हैं जिसमें हमें बताया जाता है कि पृथ्वी पर संतुलन बनाए रखने के लिए किस तरह एक प्राणी दूसरे पर निर्भर है और इसमें आया असंतुलन हम सबके जीवन चक्र को किस प्रकार असंतुलित कर सकता है। आज स्थिति इतनी विकट है कि प्रायः हम यह सुनने लगे हैं *सेव योर प्लेनेट* यानी पृथ्वी बचाओ। अब हम पृथ्वी दिवस मना कर यह सुनिश्चित भी करते हैं कि पृथ्वी के लिए हमारी आगामी योजनाएं क्या होंगी– सवाल यह है कि क्या हमें पृथ्वी को बचाना है अथवा हमें पृथ्वी पर स्वयं का जीवन सुरक्षित रखना है? क्या वाकई पृथ्वी अपनी सुरक्षा के लिए हमारी मोहताज है?

साथियो! पृथ्वी की आरंभिक संरचना से यदि आज तक के सफ़र की बात करें तो अतीत के प्रवाह में न जाने कितनी ही संस्कृति और सभ्यताएं पनपीं और समय के गर्त में लील हो गईं। हर बार कुछ न कुछ ऐसे प्राकृतिक कारण बने कि पृथ्वी पुनः सृजन कर कुछ नया लेकर आई और इतिहास के पन्नों में एक के बाद एक अध्याय जुड़ते चले गए। एक समय माया, हड़प्पा आदि समृद्ध सभ्यताएं थीं जबकि एक समय तो मात्र डायनासोर का रहा है। इसलिए यह भी स्पष्ट है कि हर बार इंसान रहेगा या नहीं, इसकी कोई सुनिश्चितता भी नहीं। इसलिए वर्तमान पारिस्थितिक असंतुलन के दुष्परिणाम भी हमें ही भुगतने होंगे, पृथ्वी को नहीं। पृथ्वी तो स्वयं अपनी निर्णायक है और उसके अपने नियम और नीतियां हैं।

बच्चो! आधुनिकता और उपभोक्ता संस्कृति के इस दौर में हर व्यक्ति प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर दोहन कर रहा है। हर घर में सुविधाओं के नाम पर ए.सी, टी.वी, फ्रिज़ वायु प्रदूषित कर रहे हैं जिससे वायु का तापमान भी बढ़ रहा है। खेतों में अच्छी पैदावार के लिए विषैले रसायन मिट्टी को दूषित कर रहे हैं। गंदे नाले, फैक्ट्रियों का गंदा पानी जल प्रदूषण बढ़ा रहे हैं। भूमि, जल, वायु और हम ही नहीं सभी जीव-जंतुओं के सहायक वनों की हम अंधाधुंध कटाई कर चुके हैं जिससे कितने ही जीव-जंतुओं का अस्तित्व समाप्त हो चुका है। बढ़ती आबादी ने प्रकृति का अधिकाधिक दोहन किया है और उसके बदले जो प्रकृति को दिया है उसके दुष्परिणाम अब हम झेल रहे हैं। नैनीताल, जोहानिसबर्ग जैसे नामचीन शहर जहां पानी का विकट संकट पैदा हो गया था वहीं समुद्र के बढ़ते जल-स्तर से कई तटीय क्षेत्र डूबने की कगार पर हैं। बढ़ते तापमान और विषैले खान-पान से घातक बिमारियां बढ़ रही हैं। प्रकृति हमारे किए का दंड हमें देने लगी है।

बच्चो प्रकृति का नियम है– जैसा दोगे वैसा मिलेगा। यदि हम प्रकृति से अपने लिए सुविधाएं चाहते हैं तो आओ उससे अपने संबंध सुधारें। पृथ्वी के जन्म दिवस पर हम *रिटर्न गिफ्ट* में उसे दें हरी-भरी साफ-सुथरी धरा, ताजी निर्मल हवा और साफ शुद्ध जल। साथियो, इसके लिए अपने घर, आंगन, बालकनी छत पौधों से भर दो। पेड़-पौधे सजीव हैं, उन्हें घर के सदस्यों के समान दर्जा दो और उनकी देख-रेख करो। स्वच्छता रखो, गंदे पानी और साफ पानी की उपयोगिता जरूरत के अनुसार करो। अनावश्यक संसाधनों का उपयोग मत करो और प्रकृति के प्रति अपने दायित्व समझो-समझाओ, यह सब करना हर व्यक्ति का दायित्व ही नहीं, आवश्यकता है। बच्चे तो इतना काम बखूबी कर सकते हैं।

आपकी बात

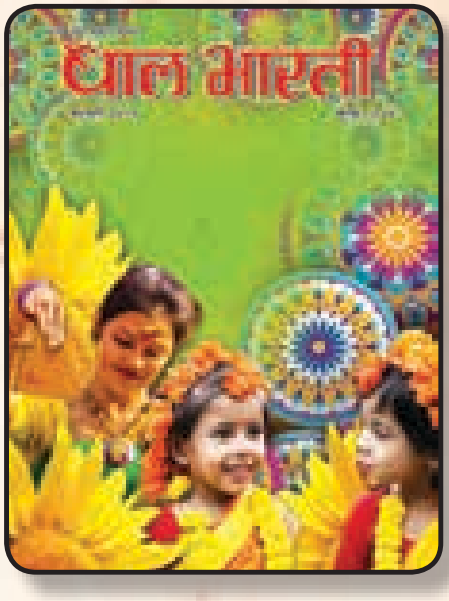

बचपन से किशोरावस्था तक मैं हर महीने *बाल भारती* पढ़ता था। पचास साल की उम्र में भी मैं इसे पढ़ने से खुद को नहीं रोक पाता। इस पत्रिका के साथ मैं अपने बचपन के दिनों में पहुंच जाता हूं। फरवरी 2019 के अंक में *हवा हूं हवा मैं, बसंती हवा हूं* पसंद आया।

–डॉ. अरुण कुमार शर्मा, जमशेदपुर, झारखंड

मैं पिछले पांच वर्षों से *बाल भारती* का पाठक हूं। मुझे इस पत्रिका का इंतजार रहता है। घर के पास पोस्ट ऑफिस होने के कारण यह पत्रिका मुझे जल्दी मिल जाती है, जबकि मार्किट में नहीं मिलती। फरवरी अंक मिला, पढ़कर दिल प्रसन्न हो गया। अंक का आवरण पृष्ठ भी मुझे बहुत अच्छा लगा। इस अंक में प्रकाशित लेख, कहानी और कविताएं सभी पसंद आईं। लेखों में *हवा हूं हवा मैं बसंती हवा हूं, फिल्मों में बच्चों के गीत* और *निशानेबाजी: कमाल कर रही है युवा ब्रिग्रेड* अच्छे लगे। कहानियों में *सफलता का राज, मिनी पिकनिक* और *खिड़की का कांच* बेहद पसंद आईं। कविताओं में *बंदर मामा, भारी बस्ता* और *कोशिश करने वालों की हार नहीं होती* रोचक थे। यह मेरी प्रिय पत्रिका है। कृपया इस पत्रिका को पाक्षिक करें।

–आरव, भोपाल, म.प्र.

बाल भारती फरवरी अंक का अध्ययन किया। हर बार की तरह इस बार भी ज्ञानवर्धक सामग्रियों की सौगात के साथ पत्रिका प्रकाशित हुई है। मैं पत्रिका के हर अंक को बिना नागा पढ़ता हूं। मेरे यहां *बाल भारती* 2005 से ही आ रही है। इसका प्रत्येक अंक मेरे पास सुरक्षित है। फरवरी अंक में प्रकाशित *पेंगुइन, भाषा संस्कृति की संवाहक* और *हवा हूं हवा मैं बसंती हवा हूं* बहुत पसंद आए। कहानियों में *मिनी पिकनिक, जंगल और बहेलिया* और *सफलता का राज* बहुत अच्छी लगे। अब मैं 25 वर्ष का हो गया हूं। लेकिन इस पत्रिका को उसी चाव से पढ़ता हूं।

–भास्कर राव, अल्मोड़ा

हमेशा की तरह *बाल भारती* फरवरी अंक भी रोचक था। यह पुस्तक बाल साहित्यिक पत्रिका है जिसमें प्रसिद्ध कवियों की कविताओं के साथ आधुनिक और समकालीन जानकारियों और विचारधारा का समावेश है। इस दौर की पत्रिकाओं में इस तरह का भाषा विन्यास कम ही देखने को मिलता है। भाषा के सरलीकरण के नाम पर उसकी विशेषताओं को दबाया नहीं जा सकता। *बाल भारती* में भाषाई सौंदर्य का सरलता और सहजता से प्रयोग मिलता है जिससे इसकी पठनीयता में भी रोचकता बनी रहती है। *बाल भारती* टीम को इसके लिए शुभकामनाएं!

–शुभेन्दु, नालंदा

बाल पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विषय में अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजें।
आप हमें ई-मेल balbharti1948@gmail.com पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेज सकते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ अपना पता, ई-मेल, फोन नंबर, अवश्य भेजें। रचना की छायाप्रति अपने पास रखें। अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी।

हनी, मनी और सनी

–राकेश 'चक्र'

मौसम सुहावना और आसमान साफ था। साल, ओक, बुरांश आदि वृक्षों की छाया का रुख पूर्व की ओर तथा सूर्य पश्चिम दिशा की ओर बढ़ रहा था। मई माह की तेज गर्मी का प्रभाव मसूरी की वादियों में महसूस नहीं हो रहा था। यहां बस्ती और आस-पास के जंगल में बंदर और लंगूर बहुतायत में थे।

पास में ही एक विशाल और मनोरम बंगला था, जिसे बिट्रिश शासन काल में वुडशन नामक अंग्रेज ने बनवाया था तथा बाद में नानकचंद नामक सेठ ने उसे खरीद लिया था। नानकचंद मुंबई में व्यापार करते थे, जो मई-जून के महीने में रहने के लिए आते थे। इस बंगले की देखभाल के लिए जोसफ नामक एक व्यक्ति अपने दो बच्चों एवं पत्नी के साथ *सर्वेंट क्वार्टर* में रहता था। जोसफ मृदुभाषी और पशु प्रेमी था। उसके यहां पहले से ही दो कुतिया पल रही थीं। जिसमें एक का नाम मनी और दूसरी का हनी था। मनी की पुत्री ही हनी है, जिसने कुछ दिन पूर्व ही चार खूबसूरत पिल्लों को जन्म दिया है। इन बच्चों में दो मादा हैं और दो नर जाति के हैं। मनी इस बार बियाई नहीं है, वह बुढ़ापे की ओर अग्रसर हो रही है। यानी कि उसकी उम्र तेरह वर्ष के आस-पास हो गई है। इनकी कुल आयु भी प्रकृति ने बारह-चौदह वर्ष ही नियत की है, जैसा कि वैज्ञानिक भी मानते हैं।

बारह वर्ष पूर्व जब जोसफ सड़क पर टहल रहे थे, तब मनी शिशु अवस्था में उनके साथ-साथ घर आ गई थी। ऐसा भी संभव था कि वह अपनी मां से भटक गई हो। वैसे वह घूमने-फिरने के योग्य हो गई थी। शायद उसकी मां ने ही कह दिया हो कि अब तुम घूमो-फिरो और अपने आप ही भोजन की तलाश करो, ये पक्षी भी तो अपने बच्चों को तब तक

पालते-पोसते और संरक्षा-सुरक्षा देते हैं, जब तक कि वह पंखों से उड़ान भरने लायक नहीं हो जाते हैं। पशु-पक्षियों का तब तक ही अपने बच्चों के प्रति उत्तरदायित्व और प्रेम रहता है जब तक कि वह अपने पैरों पर खड़े नहीं हो जाते। फिर तो वह अपने बच्चों को पूरी तरह स्वतंत्र कर देते हैं।

जोसफ ने तभी से मनी को अपने बच्चे की तरह पाला है। यानी मनी का जीवन जोसफ ने नजदीक से देखा है। मनी अपने मालिक के प्रति पूरी तरह वफादार थी। उसके रहते मजाल है कि कोई परिंदा भी पर मार सके। मनी का बच्चों से तथा बच्चों का मनी से बेहद प्रेम है।

जोसफ को बहुत कम वेतन मिलता, फिर भी किसी तरह घर का पालन-पोषण हो पाता। सब-कुछ प्रभु कृपा से ठीक-ठाक चल रहा था। परिवार में हारी-बीमारी नहीं थी, इसलिए आर्थिक अभाव में भी आर्थिक अभाव का अहसास न होता। कुल मिलाकर उनके दोनों बच्चे व पत्नी एवं जोसफ हंसी-खुशी से जीवन गुजार रहे थे, अर्थात् पूरी तरह उनका परिवार गुलजार था। उनके दोनों बच्चे राजकीय विद्यालय में पढ़ रहे थे।

आज जोसफ के घर में चाय की पत्ती और चीनी समाप्त हो गई थी। वे घर से परचून की दुकान की ओर जा रहे थे कि उन्होंने देखा कि एक बंदर के बच्चे से पांच-छह बच्चे खिलौना समझकर अठखेलियां कर रहे हैं। उसे कभी कोई अपने हाथ में लेकर गले लगाकर चूमता, तो कभी कोई हल्के से हवा में उछालता। बेचारा बच्चा असहज-सा 'चीऊं-चीऊं' कर रहा था। बच्चों को तो बस अपनी तरह मस्ती चाहिए।

जोसफ को अहसास हुआ कि यदि उन्होंने इस बच्चे को बच्चों से नहीं बचाया तो उसका जीवन खतरे में पड़ जाएगा। बंदर का बच्चा इतना छोटा था कि शायद उससे ठीक से चला भी नहीं जा रहा था। क्यों न मैं इसे अपने घर ले जाऊं, यही सोचकर उसने बच्चों को पचास रुपये का लालच दिया कि बच्चों तुम पचास रुपया ले लो तथा बंदर के बच्चे को मुझे दे दो। पचास रुपये में काफी कुछ खाने-पीने का आ जाता है।

बच्चों ने 50 रुपये का प्रस्ताव सुना तो वे प्रसन्न हो गए। उनमें से फ्रांसिस बोला, ''हां! अंकलजी इस बंदर के बच्चे को आपको दे देंगे। मैं ही तो इसे झाड़ियों में से निकालकर लाया हूं। पचास रुपये से हम छोटी-सी पार्टी करेंगे। कितना मजा आएगा...।''

जोसफ ने कहा, ''शाबाश! फ्रांसिस तुम तो सचमुच बहुत अच्छे हो, तुमने यह बहुत अच्छा काम किया है, जो इस बच्चे को झाड़ियों से निकालकर लाए तथा इसका जीवन बचा लिया। लो यह पचास का नोट''

फ्रांसिस और सभी बच्चे पचास रुपये पाकर इतने खुश हुए जैसे कि उन्होंने दुनिया की दौलत ही प्राप्त कर ली हो तथा जोसफ इसलिए प्रसन्न हुए कि उन्होंने एक असहाय का जीवन बचा लिया था।

उस समय जोसफ घर से सौ रुपये लेकर चले थे और सोचा था कि पचास रुपये की चाय की पत्ती ले लूंगा और पचास रुपये की एक किलो चीनी ले लूंगा, लेकिन उन्होंने बंदर के बच्चे का जीवन उस समय कीमती समझा, इसलिए उन्होंने चाय की पत्ती और चीनी कम ही खरीदना बेहतर समझा। वह बंदर के बच्चे को अपनी छाती से चिपकाए परचून की दुकान पर पहुंचे और तब तक सभी बच्चे भी चीज़ खाने के लालच में दुकान की ओर कूदते-भागते पहुंच गए थे।

जोसफ चीनी और चाय की पत्ती लेकर घर वापस लौटे। उनकी पत्नी और बच्चों ने एक बंदर का बच्चा देखा, तो वे उत्सुकतावश बहुत खुश हुए। उनके दस वर्षीय बेटे ने पूछा, ''पापा! इसे आप कहां से ले आए, आप तो चाय

और चीनी लेने गए थे।'' उन्होंने बच्चों और पत्नी को पूरा घटनाक्रम बताया। उनकी बेटी आयशा ने कहा, ''पापा! आप इसे बच्चों से न लाते, तो बेचारा भूख से मर जाता। ये सचमुच बड़ा प्यारा-प्यारा मखमल की तरह चिकना लग रहा है।''

उसने उसे अपने पापा की गोदी से ले लिया और उसे दुलारने और सहलाने लगी और बोली, ''लगता है पापा यह बहुत भूखा होगा, इसे दूध कैसे पिलाएंगे?''

यकायक जोसफ के पुत्र एडविन ने कहा, ''पापा इसे क्यों न हम हनी का दूध पिला दें, उसके भी तो चार बच्चे दूध पीते हैं...।''

इतना कहकर दोनों बहन और भाई हंसते-कूदते हनी के पास पहुंच गए। उनके पीछे-पीछे जोसफ और उनकी पत्नी भी। हनी उस समय आराम कर रही थी तथा उसके चारों बच्चे भी एक ओर अलसाए से आराम फरमा रहे थे। आयशा ने बंदर के बच्चे का मुंह हनी के थन से लगा दिया। वह बड़े आराम से दूध पीने लगा। हनी ने तनिक-सा भी विरोध नहीं किया, बल्कि, वह जीभ से चाट-चाट कर उस पर दुलारने लगी। यह सब देखकर पूरा परिवार खुशी से झूम उठा।

आयशा ने अपने भाई से कहा, ''एडविन हम इस बंदर के बच्चे का नाम रख लेते हैं सनी, बोल कैसा रहेगा ?''

''बहुत अच्छा, मेरी प्यारी बहना।''

कुछ ही देर में सनी दूध पीकर तृप्त हो गया था। वह धीरे-धीरे चलकर हनी के बच्चों के पास पहुंच गया था तथा उनसे दोस्ती करने में मशगूल हो गया। हनी के चारों बच्चे भी नए दोस्त को पाकर बहुत खुश थे। ❑

–90, शिवपुरी, मुरादाबाद
(उ.प्र.)

वन है तो जल है

–उमेश वाघेला

वन है, तो जल है।
जल है, तो कल है।
वर्ना सब विफल है।

पर्वत है, तो झरने हैं।
झरने है, तो नदियां हैं।
वर्ना सिर्फ बंजर है।

पेड़ है, तो छांव है।
छांव है, तो विश्राम है।
वर्ना जिंदगी तपन है।

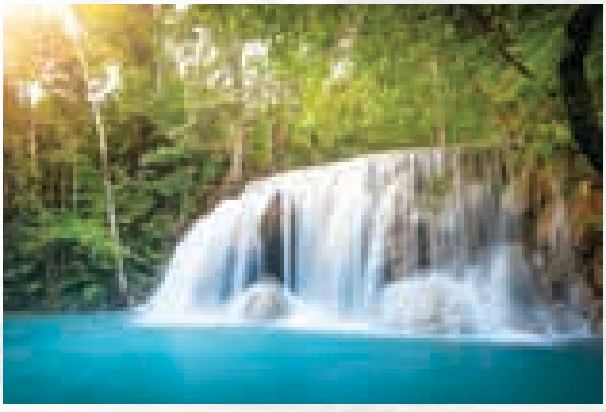

वृक्ष है, तो वर्षा है
वर्षा है, तो भूजल है।
वर्ना मृत्यु हर पल है।

डगर है, तो सफर है।
सफ़र है, तो मंझिल है।
वर्ना सिर्फ भटकाव है।

–बी-8, संत तुकाराम व्यापार संकुल,
प्रथम तल, निगदी, पुणे-411044

विश्व पुस्तक दिवस

बच्चों का ज्ञानालय

–राज शेखर

कुछ दिनों से रोहन के हाव-भाव बदल से गए हैं। विद्यालय से आने के बाद वह दादाजी के साथ थोड़ा वक्त बिताता था। दादाजी उसे ढेर सारी कहानियां सुनाते थे। वह कहानियों की नई-नई किताब लाते थे। रोहन उन्हें बहुत रुचि लेकर पढ़ता था। अब ऐसा नहीं है। इधर दादाजी ने उसके लिए एक नई किताब लाए थे, लेकिन रोहन ने उसे देखा तक नहीं।

पहले की बात कुछ और थी। दादाजी कुछ भी लाते तो रोहन उसमें अपनी रुचि दिखाता था। ढेर सारे सवाल पूछता था। किंतु जब से रोहन के पापा ने उसके जन्मदिन पर आईपैड दिया है, तब से रोहन उसी में लगा रहता है। एक दिन दादाजी ने रोहन को शाम में पार्क चलने को कहा। परंतु रोहन ने साफ मना कर दिया। दादाजी बहुत नाराज हुए। वह बोले-

''तुम हर समय इस स्क्रीन से चिपके रहते हो। क्या करते हो इसमें?''

''दादाजी! आप नहीं समझेंगे। ये सब न्यू जेनेरेशन की चीजें हैं।''

''रहने भी रोहन! मुझे मत समझाओ। हमेशा एक ही चीज में चिपके रहना अच्छी बात नहीं है। खुली हवा में भ्रमण करना और खेलना स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।''

उसी समय सुधांशु अंकल आ गए। उन्होंने दादाजी से पूछा-

''आप कहीं जा रहे हैं? आपसे कुछ बात करनी थी।''

''चलो हमारे साथ सैर पर... वहीं बात भी हो जाएगी।''

वे दोनों पार्क की ओर बढ़े। तभी रोहन भी पीछे से आ गया। उसे लगा कि दादाजी बुरा मान जाएंगे। रोहन को देखकर दादाजी बहुत खुश हुए।

कुछ दूर चलने के बाद सुधांशु अंकल ने कहा-''ताऊजी! आपको तो पता है कि मैं गरीब बच्चों के लिए पाठशाला चलाता हूं। हमारे पास उतने पैसे नहीं होते कि सभी बच्चों को नई किताबें दे सकें। इसलिए यदि पुरानी किताबों की व्यवस्था हो

सके तो बच्चों को पढ़ाना भी थोड़ा आसान हो सकेगा।''

''इसमें मेरा एक सुझाव है। क्यों न हम अपने मुहल्ले में एक छोटी-सी पुस्तकालय खोल दें। उसमें गरीब बच्चों के साथ-साथ और भी बच्चे इसका लाभ ले सकेंगे। पुस्तकालय के लिए हम लोगों से सहायता राशि के रूप में पुस्तक ले सकते हैं। हमारे घरों में कई पुस्तकें यूं ही पड़ी रहती हैं। वे पुस्तकालय का हिस्सा बनेंगी तो सभी के लिए उपयोगी होंगी।''

''सही कहा ताऊजी आपने, हम लोग इसी के लिए प्रयास करेंगे।'' सुधांशु अंकल के चेहरे पर खुशी साफ देखी जा सकती थी। दादाजी ने कहा- ''23 अप्रैल मंगलवार को पुस्तकालय का उद्घाटन करेंगे। पुस्तकालय का नाम होगा 'ज्ञानालय'। सुधांशु तुम्हारे पास एक महीने का समय है। पुस्तकालय खोलने के लिए रूपरेखा तैयार कर तुम मुझसे कल मिलो।''

''जरूर ताऊजी।'' यह कहकर सुधांशु अंकल वहां से चले गए। रोहन ने दादाजी से पूछा- ''दादाजी! आपने 23 अप्रैल का दिन क्यों चुना?'' पहले दादाजी मुस्कुराए, फिर कहा- ''23 अप्रैल को 'विश्व पुस्तक दिवस' मनाया जाता है। इसी शुभ दिन जब हमारे मुहल्ले में पुस्तकालय खुलेगा तो लोग इस दिन के महत्व को भी समझेंगे।''

''दादाजी! मुझे भी इसके बारे में कुछ पता नहीं है।'' रोहन ने कहा। तब दादाजी ने कहना प्रारंभ किया-

''विश्व स्तर पर महसूस किया गया कि लोग पुस्तकों से दूर होते जा रहे हैं। लोगों को अधिक-से-अधिक किताबों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए पहली बार 23 अप्रैल 1995 ई. को यूनेस्कों के द्वारा 'विश्व पुस्तक दिवस' मनाने की शुरुआत हुई। इसकी आधारशिला 1995 ई. में पेरिस में रखी गयी। इसी तिथि को विश्व प्रसिद्ध लेखक *विलियम शेक्सपियर* का जन्म हुआ था। उन्होंने लगभग 35 नाटक और 200 कविताएं लिखी थीं।''

''भारत में 2001 ई. से विश्व पुस्तक दिवस मनाने की घोषणा की गई है। अब यह 100 से भी ज्यादा देशों में मनाया जाता है। इन देशों के विश्वविद्यालयों, स्कूलों, सरकारी संस्थाओं, पेशेवर समूहों तथा निजी व्यापार के लोग इससे जुड़े।''

''दादाजी! इसका उद्देश्य क्या है?'' रोहन ने पूछा।

''सालों से किताबों के माध्यम से ज्ञान की एक विकासशील परंपरा चली आ रही है। यदि किताबें न हों तो हम ऐसी बहुत सारी जानकारियों से वंचित हो जाएंगे जो हमने पहले हासिल की थीं। इसलिए इसका उद्देश्य बच्चों के बीच किताब पढ़ने की आदत को बढ़ावा देना है। कॉपीराइट का प्रयोग कर पुस्तकों का प्रकाशन और संरक्षण करना है। इसके साथ ही लोगों को अधिक-से-अधिक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना ताकि लोगों को सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में मदद मिल सके।''

''एक बार अब्राहम लिंकन ने कहा था कि जो बातें मैं जानना चाहता हूं वे किताबों में हैं; मेरा परम मित्र वह आदमी होगा जो मुझे वह किताब देगा जो मैंने नहीं पढ़ी होगी।''

''जिन लोगों को पुस्तक पढ़ने में रुचि होती है, वे किताबें पढ़े बिना संतुष्ट नहीं हो पाते भले ही वे किताबों के बारे में सारी बातें मीडिया के माध्यम से जान गए हों। किताब पढ़ने से हमारा दिमाग एक अलग तरह से सक्रिय होता है जो टी. वी. देखने और सुनने से नहीं होता। पुस्तक पढ़ने से हमारी याददाश्त तेज होती है। कल्पना शक्ति का

विकास और रचनात्मक क्षमता बढ़ती है।''

''पुस्तक पढ़ने से जीवन के प्रति एक नयी सोच पैदा होती है। हमें नयी सूचना, नयी समझ और नए रास्ते प्राप्त होते हैं, जिससे हम अपने जीवन में आई चुनौतियों का सामना बेहतर तरीके से करते हैं। हम संसार को अलग तरीके से देखते हैं। हमारे व्यक्तित्व को एक नया आधार मिलता है।''

''किताबें हमारी गौरवशाली विरासत, संस्कृति, पराक्रमी इतिहास एवं ज्ञान के भंडार का स्रोत हुआ करती हैं। ज्ञान से ही हमारे जीवन को मजबूती मिलती है और उसी से हमें मान और सम्मान भी मिलता है। जिन भी विषयों में हमारी दिलचस्पी होती है। पुस्तकें उनके प्रति हमारी सोच और समझ को परिपक्व करती हैं। जब हम किसी विषय पर अपनी बात को अभिव्यक्त करते हैं तो सामनेवाले को उसमें गहराई साफ नजर आती है।''

''जानते हो रोहन! विश्व की करीब 50 प्रतिशत आबादी किताबों से वंचित है। अज्ञान और अंधकार भरे समाज के लिए किताब पहुंचाने की कोशिशें विश्व स्तर पर जारी हैं। भारत में 'सर्व शिक्षा अभियान' के माध्यम से अधिक-से-अधिक बच्चों तक किताबों को पहुंचाने का प्रयास है।''

''अच्छा तो इसीलिए सुधांशु अंकल बच्चों के लिए पुस्तकों की व्यवस्था करना चाहते हैं ताकि वे सब भी जीवन में सफल हो सकें।'' रोहन ने कहा।

''बिलकुल सही कहा तुमने। बिना किताब के हमारा जीवन अधूरा है। टी.वी. देखते हुए सोने से अच्छा है किताबें पढ़ते हुए सोना। किताब पढ़ने से तनाव

में कमी आती है और हमारा मस्तिष्क एक अच्छी नींद के लिए तैयार हो जाता है। जैसे तुम आजकल आईपैड पर अपना ज्यादा समय देते हो, वह सही नहीं है। उसपर ई-बुक पढ़ते रहने से नींद जल्दी नहीं आती है। अनिद्रा की भी समस्या हो सकती है जबकि असली किताबों के साथ ऐसा नहीं होता।''

''तो यह बात है दादाजी! इसलिए आप हमेशा किताब पढ़ने पर जोर देते हैं। दादाजी! उसके लिए माफी। अब आपकी हर बात मानूंगा।'' रोहन ने पश्चाताप के साथ कहा।

''तुम्हें मेरी बात समझ में आ गई। यही मेरे लिए काफी है। पुस्तक केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं होती बल्कि वे हमें जीवन जीने का रास्ता बताती हैं। वे हमारे दोस्त होते हैं। वे अकेलेपन और सूनेपन में साथ निभाती हैं। वे हमें दुख और हीन भावना का शिकार होने से बचाती हैं। हमारी सकारात्मक सोच को आगे बढ़ाती हैं।''

''दादाजी! विश्व पुस्तक दिवस के बारे में कुछ और बातें बताइए।'' रोहन ने अपनी इच्छा प्रकट की।

''प्रत्येक वर्ष इस दिवस का एक विषय होता है। 2018 ई. का विषय *पढ़ना, यह मेरा अधिकार है* था। इस साल का विषय *शेयर ए स्टोरी* है। इस दिन पूरे विश्व में कार्यक्रम आयोजित होते हैं। इसमें यूनेस्को राष्ट्रीय परिषद्, यूनेस्को क्लब, केंद्रीय संस्थान, पुस्तकालय, शैक्षणिक संस्थान, लेखक, प्रकाशक, शिक्षक विद्यार्थी सभी शामिल होते हैं।''

दादाजी की बात सुनते-सुनते रोहन कहीं खो गया। जब दादाजी ने घर चलने के लिए उसे झकझोरा तब उसने कहा- ''हां दादाजी! अब घर चलिए।''

23 अप्रैल, 2019, 4 बजे सायं।

मुहल्ले के सभी लोग और बच्चे नई पुस्तकालय के शुभारंभ के लिए जमा हुए थे। सुधांशु अंकल ने दिन-रात इसके लिए मेहनत की थी। सभी के सहयोग से लगभग पांच हजार किताबें जमा हो गई थीं। वहां उपस्थित लोगों के अनुरोध पर दादाजी ने फीता काटकर पुस्तकालय का उद्घाटन किया। पुस्तकालय का नाम 'ज्ञानालय' रखा गया। दादाजी ने सभी को संबोधित किया और बताया कि हमारे मुहल्ले में एक पुस्तकालय होना क्यों जरूरी था।

रोहन ने अपने मित्रों के सहयोग से पुस्तक के पढ़ने के महत्व को लेकर कई पोस्टर बनाए थे। सभी लोग उसे रुचि के साथ पढ़ रहे थे और बच्चों को इसके लिए शाबाशी भी मिल रही थी।

कुछ पुस्तक विक्रेताओं ने बुक-स्टॉल भी लगाए थे। उन्होंने भी कुछ किताबें पुस्तकालय को दान में दी थीं और साथ में, बच्चों को पुरस्कार स्वरूप पुस्तकें देने की भी व्यवस्था की थी। बहुत सारे लोग किताब खरीद रहे थे। रोहन और रिमी ने भी कुछ किताबें खरीदीं। रिमी ने अपनी मम्मी के लिए कुकिंग की एक किताब ली।

वहां बच्चों के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका विषय था -'शेयर ए स्टोरी'। सभी बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। एक गरीब बच्चे ने बहुत ही भावुक कहानी सुनायी, जिसमें उसने बताया कि कैसे वह पढ़ने के लिए संघर्ष कर रहा है और सुधांशु अंकल इसमें उसकी मदद कर रहे हैं। प्रथम पुरस्कार इसी बच्चे को मिला। रोहन और सभी बच्चों ने उसे अपने कंधे पर उठाकर कहा- हिप हिप-हुर्रे।❑

-एच. 1103, टी. एन. ए. आई. एस. हाउसिंग काम्पलेक्स, वेस्ट नटेशन नगर, विरूगमबाकम, चेन्नई, तमिलनाडु-600092

नायाब नसीहत

–चैतन्य

छुट्टी का दिन था, अर्श और अंशु सुबह-सुबह अपने-अपने घर से निकल पड़े।

उनके हाथ में झाड़ू और कुदाली देख कर पड़ोसी जगमोहन ने टोका, ''सुबह-सुबह कहां जा रहे हो?''

''हम मोहल्ले की सफाई करने निकले हैं। स्कूल में निशा मेम ने कहा है कि हमें अपने मोहल्ले की सफाई करनी है और स्वच्छता अभियान का भी नारा लगाना है। सो हम सभी बच्चे आज छुट्टी के दिन अपने मोहल्ले की सफाई करेंगे और नारा लगाएंगे।'' अर्श ने जवाब दिया।

निशा मेम स्कूल की टीचर थी। कस्बा में स्वच्छता अभियान पूरजोर चल रहा था। गली-पगडंडी में नारे लगाए जा रहे थे। इसलिए निशा मेम ने मोहल्ले की सफाई करने और स्वच्छता अभियान पर नारे लगाने के लिए स्कूल के बच्चों से कहा था।

''तुम दो और इतने बड़े मोहल्ले की सफाई कैसे करोगे'' जगमोहन ने शंका जताई।

''नहीं, नहीं'' अंशु ने कहा, ''मोहल्ले के और हमारे साथी हैं। सोहन है, मोहन है, अशोक है, रिंकी है, टिंकू है, नैनी है। साथ में और हमारे साथी हैं।

''तुम 8-10 बच्चों से 100 परिवार के मोहल्ले की गंदी गली-नालियों की सफाई संभव है?'' जगमोहन ने शंका की मुद्रा में कहा।

''क्यों नहीं?'' अर्श ने जवाब दिया।

अर्श का उत्साह देख जगमोहन ने कहा, ''तुम्हारे इरादे तो बड़े नेक हैं। मगर बात यह है, तुम केवल अपनी छुट्टियों में मोहल्ले की सफाई कर लोगे, दूसरे दिनों तो तुम्हें स्कूल जाना है। तीसरे-चौथे दिनों से मोहल्ले की सड़क और गली-नालियों में फिर गंदगियों का ढेर लग जाएंगा।''

जगमोहन की बातों में सच्चाई थी।

''यह सच है।'' अंशु ने कहा।

उसका उत्साह ठप दिखाई पड़ा अर्श का भी।

अर्श और अंशु का हतोत्साह भांप कर जगमोहन ने कहा, ''बेटे, यदि तुम्हारे इरादे पक्के हैं तो हतोत्साहित होने की जरूरत नहीं। मानो तो एक बात कहूं?''

''कहिए?'' उत्सुकता से अर्श ने कहा।

''बेटा, मैं सेवानिवृत्त टीचर हूं। मुझे गली-मोहल्ले का अच्छा तजुर्बा है।

इस मोहल्ले के लोग बड़े आलसी है। गंदा बने रहना और गंदगी में रहना पसंद करते हैं। इसलिए, मोहल्ले की सफाई एक दिन कर लोगे तो क्या मोहल्ला हमेशा साफ रहेगा।'' जगमोहन बोला।

''नहीं'' अर्श ने कहा।

''दरअसल, प्रदूषण की वजह से रोज बवंडर सरजोरी मचाते हैं। धूल-गर्द और सूखी-पीली पत्तियों के कूड़े-कचरे नालियों में रोज इकट्ठे कर के गंदगी पैदा करते हैं। मोहल्ले के लोगों को तो गंदगी में रहना पसंद है। इसलिए इन्हें जूं तक नहीं रेंगती। इस कारण से मोहल्ला गंदा कहलाता है। इसलिए मैं कहता हूं- गंदगी में रहो, मगर गंदे मत बनो तो मोहल्ला अपने आप साफ दिखेगा।'' जगमोहन ने इत्मीनान से कहा।

जगमोहन की कुछ बातों में से अर्श को कुछ बातें समझ में नहीं आई। उसने पूछा, ''गंदगी में रहो, मगर गंदे मत बनो का मतलब क्या है?''

''मतलब साफ है। मोहल्ला गंदा रहता है। इसलिए हम गंदे कहलाते हैं। यदि रोज हम अपने मोहल्ले की साफ-सफाई पर ध्यान दें तो हम गंदे कैसे हो सकते हैं? गंदगी में रहो, मगर गंदे मत बनो का अर्थ है मन से गंदे रहने का इरादा त्यागना है, समझ गए न?'' जगमोहन ने अर्श और अंशु को बड़े प्यार से समझाया।

''समझ गए।'' अर्श और अंशु ने एक साथ कहा।

''अच्छी बात है। अब तुम अपने-अपने घर वापस जाओ? तुम 2 या 8-10 की मेहनत से पूरा मोहल्ला स्वच्छ नहीं होगा। मन की गंदगी को हमें पहले दूर करना होगा। सबके दिलों-दिमाग में जागृति पैदा करनी होगी। इसके बाद ही स्वच्छ मोहल्ले की कल्पना साकार होगी। वरना एक दिन की सफाई और कोरे अभियान नारेबाजी वगैरह-वगैरह से कुछ नहीं होगा।'' जगमोहन ने नसीहत दी।

तभी खड़े-खड़े अर्श और अंशु ने अपने-अपने मन में संकल्प किया कि दोनों सबसे पहले अपने-अपने घर-गली और नालियों की सफाई पर ध्यान देंगे और जगमोहन की नसीहत को अपने स्कूल की निशा मेम को सुनाएंगे।

''अच्छा हम अपने-अपने घर वापस चलते हैं।'' अर्श ने जगमोहन से कहा, और अपने-अपने घर वापस चल दिए।

दूसरे दिन अर्श और अंशु ने अपने स्कूल की निशा मेम को जगमोहन की नसीहत सुना दी। नसीहत मोहल्ले के लिए नायाब लगी। इसलिए निशा मेम ने स्कूल के बच्चों को 'गंदगी में रहो, मगर गंदा मत बनो' का पाठ पढ़ाना शुरू कर दिया। बच्चों ने भी अपने आस-पास और मोहल्ले के बच्चों और परिवारों से भी इस बारे में बात की और अपने आस-पास सफाई पर ध्यान देने लगे।

दो पखवाड़े के भीतर मोहल्ले के लोग रोज अपने-अपने घर की गली-नालियों की गंदगियां साफ करते दिखाई देने लगे। धीरे-धीरे मोहल्ला ही नहीं उससे जुड़े पार्क भी स्वच्छ रहने लगे। मोहल्ले में स्वच्छता अभियान चलाने और नारेबाजी करने की जरूरत महसूस नहीं हुई। ❑

–दानाउली, पो. कोटगढ़, नोवामुण्डी बाजार, जिला-प. सिंहभूमि, झारखण्ड-833218

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(जून, 2019)

बाल भारती का लोकप्रिय कॉलम 'चित्र बनाओ प्रतियोगिता' पाठकों की मांग पर पुनः आरंभ किया गया है। इस कूपन के साथ 30 अप्रैल, 2019 तक *'गर्मी उफ! गर्मी'* पर आधारित एक आकर्षक चित्र बनाकर हमारे पास भेजें। पुरस्कृत तथा सराहनीय चित्रों को *बाल भारती* में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को एक वर्ष तक हमारी ओर से *बाल भारती* की मुफ्त सदस्यता दी जाएगी।

नाम .....

आयु .....

पता .....

.....

.....

इस प्रतियोगिता में 16 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

विश्व पृथ्वी दिवस

धरती को बचाने की चुनौती

–मंजू चौहान

जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरों, संसाधनों के अंधाधुंध दोहन और बढ़ते कचरे से आज धरती के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो गया। हमारे सामने आज उसे बचाने की सबसे बड़ी चुनौती पैदा हो गई है। हमारी संस्कृति और सभ्यता में धरती को मां से भी बड़ा माना गया है। संस्कृत के एक श्लोक में कहा गया है, 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी।' हमारे देश में प्राचीन काल से ही धरती और संपूर्ण प्रकृति की पूजा की जाती है। पृथ्वी के विभिन्न स्वरूपों जिसमें पेड़-पौधे, नदी-तालाब, मिट्टी-पत्थर, पशु-पक्षी आदि की हम आदि काल से पूजा करते आ रहे हैं। इसके बावजूद पृथ्वी पर कई आसन्न संकट मंडरा रहे हैं। इन खतरों का असर धरती पर रहने वाले सभी प्राणियों एवं वनस्पतियों पर भी पड़ रहा है। प्रतिवर्ष 22 अप्रैल को मनाए जाने वाले पृथ्वी दिवस की इस बार की थीम भी विभिन्न प्रजातियों को बचाने की है। यह खतरा है कि जलवायु परिवर्तन के खतरे से जीव-जंतुओं तथा वनस्पतियों की करोड़ों प्रजातियां आने वाले समय में विलुप्त हो सकती हैं। जिससे हमारी जैव विविधता खतरे में पड़ जाएगी।

पृथ्वी दिवस की भले ही एक *थीम* हो। लेकिन हमें यह बात याद रखनी होगी कि यदि मानव जाति का कल्याण चाहिए तो हमें पहले धरती को बचाना होगा। वर्ना जिस प्रकार पूर्व में कई मानव सभ्यताएं लुप्त हुई हैं, वैसा ही आने वाले दिनों में फिर हो जाएगा। इतिहास गवाह है कि चार हजार साल पूर्व भी पृथ्वी के बिगड़ते पर्यावरण और जलवायु के कारण मेडिटेरियन सागर से सिंधु घाटी और मेसोपोटामिया तक फैली कांस्य युग की कई सभ्यताएं धीरे-धीरे लुप्त हो गई। माया सभ्यता भी जलवायु परिवर्तन की भेंट चढ़ी। हम इतिहास में ज्यादा दूर न भी जाएं तो

ताजा उदाहरण एशिया के खामेर साम्राज्य का है। जहां प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुध दोहन के कारण इसका नामोनिशां मिट चुका है।

धरती कितने बड़े खतरे से गुजर रही है, यह हाल में जारी आईपीसीसी की रिपोर्ट से पता चलता है। इस रिपोर्ट के अनुसार यदि जलवायु परिवर्तन की रोकथाम के लिए ठोस प्रयास नहीं हुए तो धरती का तापमान सदी के अंत तक दो डिग्री से ज्यादा बढ़ जाएगा। जबकि पेरिस समझौते के तहत इसे दो डिग्री से नीचे रखने पर जोर दिया गया है। आईपीसीसी रिपोर्ट में कहा गया है कि इसे डेढ़ डिग्री से नीचे लाना होगा। वर्ना धरती के समक्ष बड़ा खतरा पैदा हो जाएगा। जहां तक भारत का प्रश्न है देश के विभिन्न हिस्सों में तापमान में डेढ़ डिग्री तक की बढ़ोत्तरी देखी गई है। मौसम विभाग की ताजा रिपोर्ट के अनुसार मौसम पर जलवायु परिवर्तन का असर साफ नजर आने लगा है। वर्ष 2018 के दौरान देश का औसत तापमान सामान्य से 0.41 डिग्री ज्यादा दर्ज किया गया है। वर्ष 2018 पिछले 117 सालों में छठा सर्वाधिक गर्म साल रहा है। इसी प्रकार 2018 की सर्दियों के मौसम पर नजर डालें तो इसमें 0.59 डिग्री की बढ़ोत्तरी देखी गई। 1901 के बाद से यह इन महीनों के हिसाब से पांचवा सर्वाधिक गर्म साल रहा।

इसके अलावा बारिश का पैटर्न भी बदल गया है जिसका सबसे बड़ा दुष्प्रभाव खेती पर पड़ सकता है। आने वाले समय में हमारी खाद्य उत्पादन क्षमता प्रभावित हो सकती है। बारिश घटने लगी है। पिछले 45 सालों में वार्षिक औसत बारिश में 86 मिलीमीटर की कमी आई है। 1970-2015 के दरम्यान मौसम में व्यापक बदलाव आए हैं। जिसका प्रभाव खेती पर पड़ रहा है। नतीजा यह है कि खरीफ की फसल के दौरान होने वाली बारिश में 26 मिलीमीटर की कमी आई है जबकि रबी सीजन की बारिश 33 मिलीमीटर घटी है। जबकि आज भी हमारी आधी खेती बारिश पर निर्भर है।

आईपीसीसी की रिपोर्ट यह भी कहती है कि 2050 तक सर्दियों के औसत तापमान में आधे डिग्री की बढ़ोत्तरी हो सकती है। इससे देश में प्रति हेक्टर गेहूं का उत्पादन 450 किग्रा घट जाएगा। दूसरे शब्दों में इसका मतलब यह हुआ कि प्रति वर्ष 130 लाख टन गेहूं उत्पादन घटेगा। यह गेहूं उत्पादन उतना ही है जितना सार्वजनिक वितरण प्रणाली के जरिए देश में 30 करोड़ लोगों को साल भर में मुहैया कराया जाता है। कुछ अफ्रीकी देशों में 2020 तक 50 फीसदी कृषि उत्पादन घटने की आशंका है। भारत में अभी पानी की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 1820 क्यूबिक मीटर है जो वैश्विक मानकों से कम है। लेकिन 2050 में यह और घटकर 1140 मीटर रह जाएगी। ग्लेशियर पिघल जाएंगे और एक समय ऐसी स्थिति आएगी जब गंगा यमुना जैसी नदियां सूख जाएंगी। ये खतरे बहुत बड़े हैं इसलिए पृथ्वी को इन खतरों से बचाने की चुनौती और भी बड़ी है। इसलिए तापमान बढ़ोत्तरी को एक-डेढ़ डिग्री के बीच ही सीमित रखने की कोशिशें हो रही हैं।

जलवायु परिवर्तन के खतरे इतने व्यापक हैं कि उनकी कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। हावर्ड के टी.एच स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ की रिपोर्ट के अनुसार कार्बन उर्त्सजन में बढ़ोत्तरी के कारण चावल, गेहूं समेत तमाम फसलों में पोषक तत्व घट रहे हैं। इसके चलते 2050 तक दुनिया में 17.5 करोड़ लोगों में जिंक की कमी हो जाएगी। जबकि 12.2 करोड़ लोग प्रोटीन की कमी से ग्रस्त होंगे। दरअसल, 63 फीसदी प्रोटीन, 81 फीसदी लौह तत्व तथा 68 फीसदी जिंक की आपूर्ति पेड़-पौधों से होती है। जबकि 1.4 अरब लोग लौह तत्व की कमी से जूझ रहे हैं जिनके लिए यह खतरा और बढ़ सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि कार्बन-डाई-ऑक्साइड पौधों को बढ़ने में तो मदद करता है। लेकिन पौधों

में पोषक तत्वों की मात्रा को कम कर देता है।

शोध में पाया गया कि अधिक कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मौजूदगी में उगाई गई फसलों में तीन तत्वों जिंक, आयरन एवं प्रोटीन की कमी पाई गई है। वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में प्रयोग के जरिए इस बात की पुष्टि भी की है। नतीजा यह निकला है कि उच्च सीओटू प्रभाव वाले क्षेत्रों में उगने वाली फसलों में प्रोटीन, आयरन एवं जिंक की मात्रा क्रमश 10, छह तथा सात फीसदी कम हो रही है। कुछ विटामिनों की मात्रा भी घटती पाई गई है।

भारत में चूंकि कुपोषण की दर पहले से ज्यादा है, इसलिए उच्च कार्बन उत्सर्जन का यहां सर्वाधिक दुष्प्रभाव पड़ सकता है। इसी प्रकार अन्य एशियाई देशों, अफ्रीका एवं मिडिल ईस्ट के देशों पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। जो लोग पहले से किसी एक पोषक तत्व की कमी के शिकार हैं, उनमें यह समस्या और गंभीर रूप धारण कर सकती है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि गरीबों पर इसकी सबसे ज्यादा मार पड़ेगी।

उत्सर्जन में तेजी से कमी

पृथ्वी पर मंडरा रहे जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए हमारे देश में कई पहल हुई हैं। पेरिस समझौते के अनुसार भारत उत्सर्जन में कमी लाने के लिए प्रयासरत है। वन एवं पर्यावरण मंत्रालय की ताजा रिपोर्ट के अनुसार इसमें भारत को सफलता मिली है और हम तय समय से पहले इस लक्ष्य को हासिल कर रहे हैं। मंत्रालय ने संयुक्त राष्ट्र क्लाईमेट चेंज फेमवर्क (यूनएफसीसी) को भेजी अपनी रिपोर्ट कहा है कि कोपेनहेन में घोषित लक्ष्यों को समय से काफी पहले ही हासिल कर लिया गया। इसके अनुसार 2004-14 के बीच देश में जीडीपी के कार्बन उत्सर्जन तीव्रता में 21 फीसदी की कमी आई है। जबकि लक्ष्य 2020 तक 20-25 फीसदी कमी लाने का था।

रिपोर्ट के अनुसार दस सालों में उत्सर्जन में 21 फीसदी की कमी दर्शाती है कि प्रतिवर्ष यह कमी दो फीसदी की आ रही है। इस प्रकार 14 के बाद इन पांच सालों में करीब दस फीसदी की कमी और आ चुकी होगी। इस हिसाब से भारत 2020 तक ही

पेरिस में घोषित लक्ष्यों को हासिल कर लेगा जिसमें 2030 तक उत्सर्जन की तीव्रता में 33-35 फीसदी तक की कमी लानी है।

पिछला आकलन 2005-10 के बीच किया गया था जिसमें उत्सर्जन की तीव्रता में कमी 12 फीसदी दर्ज की गई थी। लेकिन इन पांच सालों में यह कमी बढ़कर 21 फीसदी हुई है। जो जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराता है।

कुछ अहम पहलें

हमारे देश में जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए कई अहम प्रयास किए गए हैं। सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता में नौ गुना की बढ़ोत्तरी हुई है। 2014 में 2.63 गीगावाट उत्पादन था जो 2018 में बढ़कर 23.18 गीगावाट हो गई। गैर जीवाश्म ईंधन की खपत 2015 में 30.5 फीसदी थी। जो 2018 में बढ़कर 35.5 फीसदी हो गया। अगले दस सालों में इसमें और कमी आएगी। वन क्षेत्रफल कुल भौगोलिक क्षेत्र का 24.39 फीसदी हुआ। 170 पुराने कोयला बिजली घरों को हटाने की प्रक्रिया शुरू की गई है। इसके अलावा ऊर्जा की खपत घटाने के लिए 21 करोड़ एलईडी का वितरण। उज्ज्वला गैस कनेक्शन के जरिए चूल्हे से होने वाले प्रदूषण को कम किया जा रहा है। फसलों के अवशेष को मशीनों से नष्ट करने और सौभाग्य बिजली योजना भी प्रदूषण घटाने वाली हैं।

देश ने पृथ्वी पर मंडरा रहे खतरों से निपटने के लिए कई पहल की हैं। इनमें राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन के जरिए स्वच्छ ऊर्जा का विकास, राष्ट्रीय हरित ऊर्जा मिशन के जरिए वनों का विस्तार और कार्बन सोखने की क्षमता में इजाफा करने, राष्ट्रीय संवर्धित ऊर्जा बचत मिशन के जरिए नई तकनीकों से ऊर्जा की खपत में कमी, राष्ट्रीय सतत परिवास मिशन के जरिए भवनों में ऊर्जा की खपत में कमी लाने, हिमालय पारिस्थितिकीय संरक्षण मिशन के तहत ग्लेशियरों एवं हिमाचली क्षेत्र को बचाने का अभियान, सतत कृषि के जरिए कृषि को जलवायु के अनुरूप तैयार करना है। इसके अलावा रणनीतिक ज्ञान मिशन के तहत नई तकनीकें विकसित की जा रही हैं जो पर्यावरण के अनुकूल होती हैं। ताकि इनके इस्तेमाल को प्रोत्साहित किया जा सके।

नई पहल-इलेक्ट्रिक वाहनों का विस्तार

हाल में सरकार ने इलेक्ट्रिक कारों को बढ़ावा देने की योजना शुरू की है। सरकारी महकमों में इलेक्ट्रिक कारों को खरीदा जा रहा है। तेजी से इलेक्ट्रिक कार की कीमतें घट रही हैं। इलेक्ट्रिक बसें, स्कूटर आदि भी तैयार हो रहे हैं। इससे पेट्रोल से निर्भरता कम होगी तो प्रदूषण कम होगा। दूसरे, सरकार ने एक अप्रैल 2020 से भारत-6 मानकों को भी लागू करने का फैसला किया है। अभी भारत चार मानक लागू थे जिसके बाद सीधे भारत-6 मानक लागू हुए हैं। धरती को बचाने के लिए यह भी एक अहम पहल है। इससे प्रदूषण में भारी कमी आएगी।

आम लोगों की भूमिका

इस सबके बावजूद धरती को बचाने में आम लोगों की भूमिका, उनके आचार-व्यवहार की भूमिका भी अहम है। सरकार के प्रयास भी तभी सफल हो पाएंगे जब उसमें आम लोगों की भागीदारी हो। चाहे वह एलईडी हो, वनों की सुरक्षा की बात हो या स्वच्छ ईंधन की। जब लोग इन्हें अपनाएंगे तभी सरकार का मकसद भी सफल होगा। दूसरे लोग अपनी ऊर्जा की जरूरतों को घटाएं। इसके कम ऊर्जा खर्च करने वाले उपकरण खरीदें, सार्वजनिक परिवहन का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करें। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कदमों से तौबा करें। इसमें छात्र-छात्राओं एवं युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। ❑

-509ए, विंग, निर्माण भवन,
मौलाना आज़ाद रोड, नई दिल्ली

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर विशेष

स्वास्थ्य: जीवन की सबसे बड़ी पूंजी

–मनीषा गुप्ता

ओजस्वी और आरव अक्सर सोने से पहले अपनी दादी से कहानी सुना करते थे। दादी की कहानियां सुने बिना उन्हें नींद नहीं आती थी। दादी की कहानियों में मनोरंजन भी होता था और एक नयी सीख भी।

दादी आज आरव और ओजस्वी को अच्छे स्वास्थ्य पर कहानी सुनाने वाली थीं। आरव और ओजस्वी दादी से कहानी सुनने के चक्कर में अपना गृहकार्य जल्दी से पूरा करने में लगे थे।

वैसे कहानी सुनने वालों में आरव और ओजस्वी ही नहीं उनके मम्मी-पापा विभोर और विनिता और दादा रमेश भी होते थे। यह ऐसा समय होता था जब पूरा परिवार साथ होता था।

गृहकार्य पूरा होते ही दोनों बच्चे दादा-दादी के कमरे में आ गए, उनके दादाजी जो हिंदी कहानियों की पुस्तक पढ़ रहे थे, वह भी बच्चों के आने से उनके साथ बैठ गए। ओजस्वी ने मम्मी-पापा को दादी के कमरे में आने के लिए आवाज लगा दी।

दादी ने बच्चों से कहा ''बच्चो,

आज मैं जो कहानी सुनाने जा रही हूं उसके अंत में आपको एक प्रश्न का उत्तर देना होगा।''

आरव ने आश्चर्य से कहा ''लो अब तो टीचर के बाद दादी भी हमसे प्रश्न पूछने लगीं।''

दादाजी ने आरव को समझाते हुए कहा ''बच्चो, प्रश्न पूछने और उनके उत्तर देने से हमें कई नई बातें भी तो पता चलती हैं।''

तब तक विभोर और विनिता भी आ गए थे। उन्होंने भी दादाजी की बात का समर्थन करते हुए कहा, ''प्रश्न बूझना भी तो हमारे ज्ञान में वृद्धि करने का एक तरीका है।''

ओजस्वी ने कहा ''ठीक है दादी, हम आपने प्रश्नों का उत्तर देने को तैयार हैं, पहले कहानी तो सुनाओ।''

दादी ने कहा ''बच्चो सुनो, पुराने समय में एक राज्य था जिसका नाम था कौशल। एक समय वह राज्य काफी संपन्न था। लेकिन एक समय ऐसा आया जब वहां दस सालों तक बहुत कम बारिश हुई। उस राज्य में अकाल की स्थिति आ गई। बिना पानी के फसल भी नहीं हो पा रही थी। बिना फसल के राज्य के नागरिकों को खाना मुश्किल से मिल पाता था। उस राज्य के नागरिकों का स्वास्थ्य भी तेजी से गिर रहा था। वहां के नागरिक गरीब होते जा रहे थे।''

दादाजी ने दादी की कहानी के बीच में बोलते हुए कहा ''बच्चो, सही कहा है बिन पानी सब सून। देखो पानी की कमी से कितनी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।''

दादी ने अपनी कहानी आगे बढ़ाते हुए कहा ''ऐसे में उस राज्य में एक सिद्ध महात्मा का आगमन हुआ। सभी लोगों ने अपने राज्य के राजा देववर्मन से निवेदन किया कि उन महात्मा के पास जाकर उनके राज्य की समृद्धि का उपाय पूछें।''

दयालु प्रवृत्ति के राजा देववर्मन तुरंत उन महात्मा के पास गए और उन्हें अपने राज्य की स्थिति के बारे में बताया।

महात्मा ने बताया ''राजन, आपके राज्य का संकट दूर हो सकता है, उसके लिए आपको हर बारिश में आपके राज्य में जितने निवासी हैं उनसे दस गुणा वृक्ष लगाने होंगे और उनकी देखभाल भी करनी होगी। जैसे-जैसे आपके राज्य में लगे नए पेड़ बढ़ेंगे, वैसे-वैसे आपका राज्य संपन्न होता जाएगा

राजा देववर्मन ने महात्मा जी को नमन करते हुए कहा ''आपका धन्यवाद कि आपने हमें संकट की इस घड़ी में यह मार्ग बताया लेकिन अभी बारिश आने में समय है। बारिश के मौसम में हम वृक्षारोपण करेंगे। तब तक के लिए कुछ ऐसा उपाए बताइए जिससे मेरी प्रजा इस संकट से मुक्त हो।''

महात्मा जी ने कुछ घड़ी अपनी अपनी आंखें बंद की और फिर राजा से बोले 'राजन, तब तक के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि आपके राज्य में संपन्नता वापिस लाए। लेकिन उससे पहले आप यह बताइए कि आप अपने निवासियों के लिए क्या पहले चाहेंगे संपत्ति या अच्छा स्वास्थ्य।'

दादी ने अपनी कहानी को रोकते हुए बच्चों से पूछा ''बच्चो यही प्रश्न आपके लिए भी है, मान लो राजा के स्थान पर आप लोग होते तो किसे पहले प्राथमिकता देते? धन को या फिर अच्छे स्वास्थ्य को;

आरव ने बिना सोचे जवाब दिया ''मैं तो धन ही मांगता, वह भी खूब सारा ताकि उनसे बहुत सारे खिलौने खरीद सकूं।''

ओजस्वी ने भी आरव की बात में हां भरते हुए कहा ''हां दादी, यदि धन है तो बीमार होने पर ईलाज करवाया जा सकता है। इसलिए मैं यदि राजा होती तो महात्मा जी से धन ही मांगती।''

दादाजी ने बच्चों को समझाते

हुए कहा ''बच्चो, धन से समान तो खरीदा जा सकता है और बीमारी का भी ईलाज करवाया जा सकता है लेकिन स्वास्थ्य का महत्व सबसे अधिक है। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तौर पर तंदुरुस्ती सुखमय जीवन का आधार है। इसलिए हर कोई अच्छे स्वास्थ्य की इच्छा रखता है।''

विनिता ने भी बच्चों को समझाते हुए कहा ''अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमेशा अनेक उपाय किए जाते रहे हैं। अच्छा स्वास्थ्य प्राचीन काल से ही हमारी प्राथमिक आवश्यकता है।''

दादी ने अपनी कहानी पूरी करते हुए बच्चों को बताया। राजा ने महात्मा जी से कहा ''महात्मन् धन कभी भी कमाया जा सकता है लेकिन स्वास्थ्य के संबंध में ऐसा नहीं है। आप मेरे राज्य के निवासियों को निरोग रहने का आर्शीवाद प्रदान करें। उन्हें स्वस्थ रहने का आर्शीवाद दें।'' महात्मा जी ने कहा कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए अच्छा पर्यावरण और स्वच्छ जीवनशैली और उचित खान-पान आवश्यक है। ये सभी एक-दूसरे के पूरक हैं इसलिए आपको अपने राज्य में प्रकृति के संसाधनों के उचित रखरखाव और उनके उचित उपयोग पर ध्यान देना होगा। जनता को यह संदेश देना होगा कि अच्छा स्वास्थ्य तभी रह सकता है जब हम अपने आस-पास के वातावरण और खान-पान को स्वस्थ बना सकें।

आरव ने निराश होकर कहा ''दादी, आज तो हमारा उत्तर गलत हो गया।''

दादाजी ने बच्चों को समझाते हुए कहा ''लेकिन अब तुम्हारा नजरिया तो बदल गया होगा न। अब तुम्हें स्वास्थ्य का महत्व तो पता चल गया होगा। शरीर रोगी है

तो आप धन कैसे कमाएंगे। यदि पहले से ही अपार धन है तो वह किसी काम का नहीं। धन से कोई रोग नहीं मिटता। शरीर स्वस्थ और सेहतमंद है तभी तो हम जीवन का आनंद ले सकेंगे। घूमना-फिरना, हंसी-मजाक, पूजा प्रार्थना, मनोरंजन आदि सभी कार्य अच्छी सेहत वाला व्यक्ति ही कर सकता है।''

''अब समझ में आया कि क्यों दादाजी बोलते रहते थे कि पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया।''

विभोर ने बच्चों को समझते हुए कहा ''बच्चो, अच्छा स्वास्थ्य हर समय सबसे बड़ी पूंजी माना जाता है। आधुनिक समय में भी, अंतर्राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य सुविधाओं को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 7 अप्रैल, 1948 को एक विशिष्ट संस्था का गठन किया जिसे आज हम विश्व स्वास्थ्य संघ या डबल्यूएचओ के नाम से जानते हैं। यह संस्था पूरे विश्व को स्वास्थ्य के महत्व से अवगत कराने का प्रयास करती है।''

आरव ने इस बारे में और अधिक जानने के लिए पूछा ''किस प्रकार से यह संस्था स्वास्थ्य सेवाओं में अपना योगदान देती है।''

विभोर ने बताया ''आधुनिक समय में बेहतर स्वास्थ्य, दवाओं, उपचारों और परामर्श पर आधारित उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर वैज्ञानिक अध्ययन होते हैं। ऐसे अध्ययनों को यह संस्था प्रोत्साहित करती है।''

ओजस्वी ने उत्सुकता से पूछा ''तो क्या यह संस्था इसके लिए कोई विशेष कार्यक्रम आयोजित करती है।''

विनिता ने बच्चों को बताया ''विश्व स्वास्थ्य संघ द्वारा आयोजित विश्व स्वास्थ्य सभा में 1950 से प्रत्येक साल 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष स्वास्थ्य से संबंधित एक विशेष विषय पर पूरे विश्व में जागरूकता के लिए विश्व स्वास्थ्य दिवस का आयोजन किया जाता रहा है। इस प्रकार विश्व स्वास्थ्य संघ से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं स्थानीय संस्थाएं चयनित विषय द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।''

आरव की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। उसने पूछा ''इस वर्ष विश्व स्वास्थ्य दिवस किस विषय पर आयोजित किया जा रहा है।''

विभोर ने आरव को जवाब देते हुए कहा ''इस वर्ष विश्व स्वास्थ्य दिवस का मुख्य विषय *यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज* यानी सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज है जिसके अंतर्गत सभी लोगों और समुदायों को जब उन्हें आवश्यक हों, तब गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना शामिल है। इसके लिए जीवन के हर पड़ाव पर रोगों से सुरक्षा, उपचार और देखभाल करने के लिए एक मजबूत प्राथमिक स्वास्थ्य व्यवस्था को विकसित करना शामिल है।''

विभोर की बात को आगे बढ़ाते हुए विनिता ने बताया ''सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्यों में शामिल है जिसे वर्ष 2030 तक पूरा करना लक्ष्यित है।''

विनिता की बात सुनकर ओजस्वी बोली, ''मम्मी वर्ष 2030 का तो पता नहीं लेकिन अभी 10 बजकर 30 मिनट जरूर हो गए हैं। यानी रात के साढ़े दस बज गए हैं। हम दोनों भाई-बहन तो चले सोने।''

आरव भी अपनी बहन के साथ जाने को खड़ा हो गया और जाने से पहले अपनी दादी को प्यार करते हुए बोला ''दादी आज की कहानी से हमें यह बात तो समझ आ गयी कि स्वास्थ्य सबसे बड़ी संपदा है।'' ❑

–बाजार नं.-2, रामगंजमंडी, राजस्थान

डॉ. भीमराव आंबेडकर : प्रेरणा के स्रोत

–डब्ल्यू.एन.कुबेर

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने तीन महापुरुषों को अपना प्रेरणा स्रोत बताया है। उनमें पहले कबीर, दूसरे महात्मा ज्योतिबा फुले और तीसरे थे भगवान बुद्ध। कबीर ने उन्हें भक्ति भावना प्रदान की, ज्योतिबा फुले ने उन्हें विरोध के लिए प्रेरित किया, सामूहिक पश्चाताप का विचार दिया और शिक्षा तथा आर्थिक उत्थान का संदेश दिया। बुद्ध से उन्हें मानसिक और दार्शनिक पिपासा बुझाने वाला अमृत मिला और मानव के उद्धार का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

दूसरे वे बूकर टी. वाशिंगटन के जीवन से बहुत प्रभावित हुए, जिनका निधन 1915 में हुआ था। वह अमरीका में नीग्रो जाति के लोगों के महान समाज सुधारक और मार्गदर्शक थे। बूकर टी. वाशिंगटन ने तुस्केगी संस्थान की स्थापना की, जिससे नीग्रो लोगों में शिक्षा-प्रसार किया और नीग्रो लोगों को सदियों की दासता के शिकंजे से मुक्त किया।

ब्रिटेन के संसदीय लोकतंत्र का कई देशों ने अनुकरण किया। जो भारतीय नेता स्वाधीनता संग्राम में जूझ रहे थे उनके सामने भी संसदीय लोकतंत्र का स्वप्न घूम रहा था। आंबेडकर ने यह अनुभव किया कि भारत की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों पर पश्चिम का प्रभाव असर छोड़ता जा रहा है। वह समझते थे कि पाश्चात्य प्रणालियों के प्रभाव से ही निम्न जातियां अपनी जंजीरें तोड़ सकती हैं। वे अपनी मिसाल देकर कहा करते थे कि किसी भी देश में मनुष्य का जीवन निर्माण जन्म से नहीं, कर्म से होता है। भारतीय राजनीति में कूदने से पहले उन्होंने लोकतंत्र, समानता और स्वतंत्रता के संबंध में समस्त पाश्चात्य दांवपेच सीख लिए थे। इंग्लैंड और अमेरिका में अध्ययन के दौरान वह इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके थे कि समाज जातीय उत्पीड़न कभी नहीं छोड़ सकता। उनका अटल विश्वास था कि संवैधानिक संरक्षणों के द्वारा निम्नजातियां एक स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर सकती हैं।

सामाजिक संघर्ष

आंबेडकर ने महात्मा फुले के सिद्धांतों को आत्मसात कर लिया था। वह एक ऐसे समाज के स्वप्नद्रष्टा थे जिसमें समानता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व का साम्राज्य हो। इंग्लैंड और अमरीका में ज्ञानार्जन करके व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण के साथ उन्होंने वह मार्ग खोज निकाला जिस पर चलने से वह अपने समाज को जातीय बंधन से छुटकारा दिला सकते थे। उन्हें जाति प्रथा से लोहा

लेना था और उसके लिए उन्हें सामाजिक लड़ाई लड़नी थी।

आंबेडकर विचार और व्यवहार में संतुलन बनाकर चलने वालों में से थे। उनकी गतिशीलता के सिद्धांतों का आधार यही था कि संसार में कुछ भी जड़ नहीं है, कुछ भी शाश्वत नहीं और कुछ भी सनातन नहीं। हर चीज़ परिवर्तनशील है। परिवर्तन मानव और समाज का धर्म है। उनका कथन था, मानव की पीड़ाओं में सामाजिक परिस्थितियों का बहुत हाथ होता है। उनका आदर्श ऐसे समाज की रचना करना था जो समता, स्वतंत्रता और मातृभाव पर विभेद हो। एक आदर्श समाज में अनेक वर्ग विद्यमान रहें और वे एक-दूसरे के हितों को समझें और सहयोग करें। समाज की समस्याएं उलझानी नहीं, सुलझानी चाहिए। इसके लिए वे सामाजिक चेतना पर जोर देते थे जिसको वे सभी अधिकारों की, चाहे वे मौलिक हों या सामाजिक, संरक्षक मानते थे। उनका कहना था कि सामाजिक प्रगति तथा सामाजिक स्थायित्व विभिन्न वर्गों के बीच लचीलेपन और बराबरी के अधिकार पर आधारित होता है। वह स्थायित्व के महत्व को मानते थे किंतु परिवर्तन की बलि चढ़ाकर नहीं जबकि परिवर्तन आवश्यक हो। समन्वय जरूर हो परंतु इसके लिए सामाजिक न्याय का गला नहीं घोट दिया जाना चाहिए। सामाजिक स्थायित्व से उनका आशय भारतीय समाज में पनपी जाति प्रथा के निषेध से है।

डॉ. आंबेडकर ने जो सामाजिक संघर्ष छेड़े उनका उद्देश्य समाज में सवर्ण जातियों द्वारा जाति प्रथा के नाम पर किए जाने वाले अन्यायपूर्ण दुर्व्यवहार का मुंह तोड़ना था। आंबेडकर चाहते थे कि समाज के सभी वर्गों का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में समान स्थान हो तथा उन्हें जीवन में ऊपर उठने के अवसर दिए जाएं और उनकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया जाए। प्रत्येक सामाजिक संघर्ष के पीछे यही मौलिक भावनाएं थीं जो कि आंबेडकर के नेतृत्व में जातीय सांप्रदायिक अत्याचारों के विरोध में छेड़े गए थे। ❑

–प्रकाशन विभाग की *आधुनिक भारत के निर्माता* शृंखला की पुस्तक *भीमराव आंबेडकर* से साभार

ईमानदारी

–मुकेश शेषमा

इस साल मेरा बेटा सातवीं कक्षा में प्रवेश पा गया... क्लास में हमेशा से अव्वल आता रहा है।

पिछले दिनों तनख्वाह मिली तो मैं उसे नई स्कूल ड्रेस और जूते दिलवाने के लिए बाजार ले गया।

बेटे ने जूते लेने से यह कह कर मना कर दिया कि पुराने जूतों को बस थोड़ी-सी मरम्मत की जरुरत है। वह अभी इस साल काम दे सकते हैं।

अपने जूतों की बजाए उसने मुझे अपने दादा की कमजोर हो चुकी, नज़र के लिए नया चश्मा बनवाने को कहा।

मैंने सोचा बेटा अपने दादा से शायद बहुत प्यार करता है इसलिए अपने जूतों की बजाय उनके चश्मे को ज्यादा जरूरी समझ रहा है।

खैर मैंने कुछ कहना जरूरी नहीं समझा और उसे लेकर ड्रेस की दुकान पर पहुंचा।

दुकानदार ने बेटे के *साइज* की सफेद कमीज़ निकाली...।

डाल कर देखने पर कमीज़ एक दम *फिट* थी...।

फिर भी बेटे ने थोड़ी लंबी कमीज़ दिखाने को कहा!

मैंने बेटे से कहा ''बेटा यह कमीज़ तुम्हें बिल्कुल सही है तो फिर और लंबी क्यों?''

बेटे ने कहा ''पिता जी मुझे कमीज़ निक्कर के अंदर ही डालनी होती है इसलिए थोड़ी लंबी भी होगी तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा।''

''लेकिन यही कमीज़ मुझे अगली क्लास में भी काम आ जाएगी।''

पिछली वाली कमीज़ भी अभी नई जैसी ही पड़ी है लेकिन छोटी होने की वजह से मैं उसे पहन नहीं पा रहा!''

मैं खामोश रहा!

घर आते वक्त मैंने बेटे से

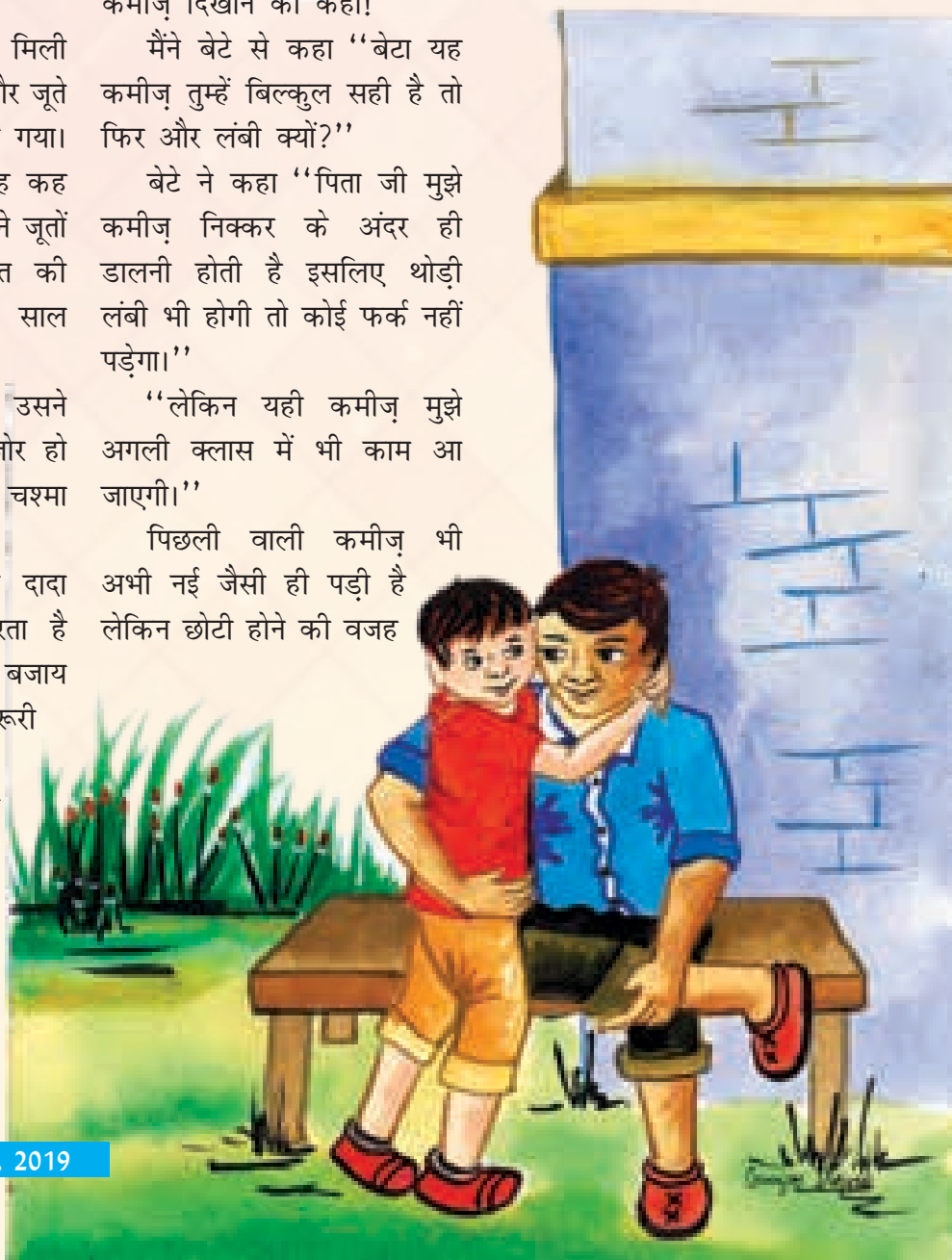

पूछा, ''तुम्हें ये सब बातें कौन सिखाता है बेटा?''

बेटे ने कहा, ''पिता जी मैं अक्सर देखता था कि कभी मां अपनी साड़ी छोड़कर तो कभी आप अपने जूतों को छोड़कर हमेशा मेरी किताबों और कपड़ों पर पैसे खर्च कर दिया करते हैं!''

''गली- मोहल्ले में सब लोग कहते हैं कि आप बहुत ईमानदार आदमी हैं और हमारे साथ वाले राजू के पापा को सब लोग चोर, बेईमान, रिश्वतखोर और जाने क्या-क्या कहते हैं, जबकि आप दोनों एक ही दफ्तर में काम करते हैं। जब सब लोग आपकी तारीफ़ करते हैं तो मुझे बड़ा अच्छा लगता है...।''

''मम्मी और दादा जी भी आपकी तारीफ करते हैं!''

पिता जी मैं चाहता हूं कि मुझे कभी जीवन में नए कपड़े, नए जूते मिले या न मिले लेकिन कोई आपको चोर, बेईमान, रिश्वतखोर या बदमाश न कहे!

''मैं आपकी ताकत बनना चाहता हूं पिता जी, आपकी कमजोरी नहीं!''

बेटे की बात सुनकर मैं निरुत्तर था।

मुझे पहली बार मुझे मेरी ईमानदारी का इनाम मिला था।

आज बहुत दिनों बाद आंखों में खुशी, गर्व और सम्मान के आंसू थे! ❑

-जिला -झुंझुनू (राज.)

नानी-नानी

-मुनटुन राज

नानी, नानी आओ न
जल्दी कैमरा लाओ न।

चिड़िया फुर्र उड़ जाएगी
डाल सूनी रह जाएगी
सपनों में जब वह आएगी
खूब ही डांट लगाएगी।।

नानी, नानी आओ न
जल्दी से बतलाओ न।

क्यों करती शाखें हिल-डुल
मुझसे ना रहती मिल-जुल
आखिर इनका काम है क्या?
समझ न पाता बात है क्या?

नानी, नानी आओ न
बरगद तले सुस्ताओ न।

ठंडी-ठंडी हवा चलती
कोयल भी राग सुनाती
दादा जी वहीं सो जाते।
ले-ले कर खर्राटे

नानी, नानी जाओ न
पौधे खरीद लाओ न।

आंगन उसे लगाऊंगा
रोज खूब नहलाऊंगा
अपना दोस्त बनाऊंगा
जी भर मन बहलाऊंगा।

नानी, नानी देखो न
उससे जल्दी पूछो न।

क्यों पत्तियां अब मुर्झाती हैं
जिंदगी से वे जाती हैं
जल्दी मरहम लाओ न
उसे मल-मल लगाओ न।

नानी, नानी आओ न
जल्दी कैमरा लाओ न।

-किलकारी बिहार, बाल भवन, पटना, सैदपुर-4

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार प्रांत के बेगूसराय जिले के सिमरिया घाट में हुआ। वह हिंदी के प्रमुख लेखक, कवि व निबंधकार थे। वह आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। श्री दिनकर स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र कवि के रूप में जाने गए। वह छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे। उनकी कृति 'उर्वशी' को *भारतीय ज्ञानपीठ* पुरस्कार और 'कुरुक्षेत्र' को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में 74वां स्थान पाने का गौरव प्राप्त है। इनका निधन 24 अप्रैल, 1974 को हुआ।

मंगल-आह्वान

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

भावों के आवेग प्रबल
मचा रहे उर में हलचल।

कहते, उर के बांध तोड़
स्वर-स्रोतों में बह-बह अनजान,
तृण, तरु, लता, अनिल, जल-थल को
छा लेंगे हम बनकर गान।

पर, हूं विवश, गान से कैसे
जग को हाय! जगाऊं मैं,
इस तमिस्र युग-बीच ज्योति की
कौन रागिनी गाऊं मैं?

बाट जोहता हूं लाचार
आओ स्वरसम्राट! उदार
पल भर को मेरे प्राणों में
ओ विराट गायक आओ,
इस वंशी पर रसमय स्वर में
युग-युग के गायन गाओ।

वे गायन, जिनके न आज तक
गाकर सिरा सका जल-थल,
जिनकी तान-तान पर आकुल
सिहर-सिहर उठता उडु-दल।

आज सरिता का कल-कल, छल-छल,
निर्झर का अविरल झर-झर,
पावस की बूंदों की रिम-झिम
पीले पत्तों की मर्मर,

जलधि-सांस, पक्षी के कलरव,
अनिल-सनन, अलि का गुन-गुन
मेरी वंशी के छिद्रों में
भर दो ये मधु-स्वर चुन चुन।

दो आदेश, फूंक दूं श्रृंगी,
उठें प्रभाती-राग महान,
तीनों काल ध्वनित हो स्वर में
जागें सुप्त भुवन के प्राण।

गत विभूति, भावी की आशा,
ले युगधर्म पुकार उठे,
सिंहों की घन-अंध गुहा में
जागृति की हुंकार उठे।

जिनका लुटा सुहाग, हृदय में
उनके दारुण हूक उठे,
चीखूं यों कि याद कर ऋतुपति
की कोयल रो कूक उठे।

प्रियदर्शन इतिहास कंठ में

आज ध्वनित हो काव्य बने,
वर्तमान की चित्रपटी पर
भूतकाल संभाव्य बने।

जहां-जहां घन-तिमिर हृदय में
भर दो वहां विभा प्यारी,
दुर्बल प्राणों की नस-नस में
देव! फूंक दो चिनगारी।

ऐसा दो वरदान कला को
कुछ भी रहे अजेय नहीं,
रजकण से ले पारिजात तक
कोई रूप अगेय नहीं।

प्रथम खिली जो मधुर ज्योति
कविता बन तमसा-कूलों में
जो हंसती आ रही युगों से
नभ-दीपों, वनफूलों में,

सूर-सूर तुलसी-राशि जिसकी
विभा यहां फैलाते हैं
जिसके बुझे कणों को पा कवि
अब खद्योत कहाते हैं,

उसकी विभा प्रदीप्त करे
मेरे उर का कोना-कोना
छू दे यदि लेखनी, धूल भी
चमक उठे बनकर सोना।।

जालियांवाला शहादत के 100 वर्ष...!

चित्रकथा :
परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव

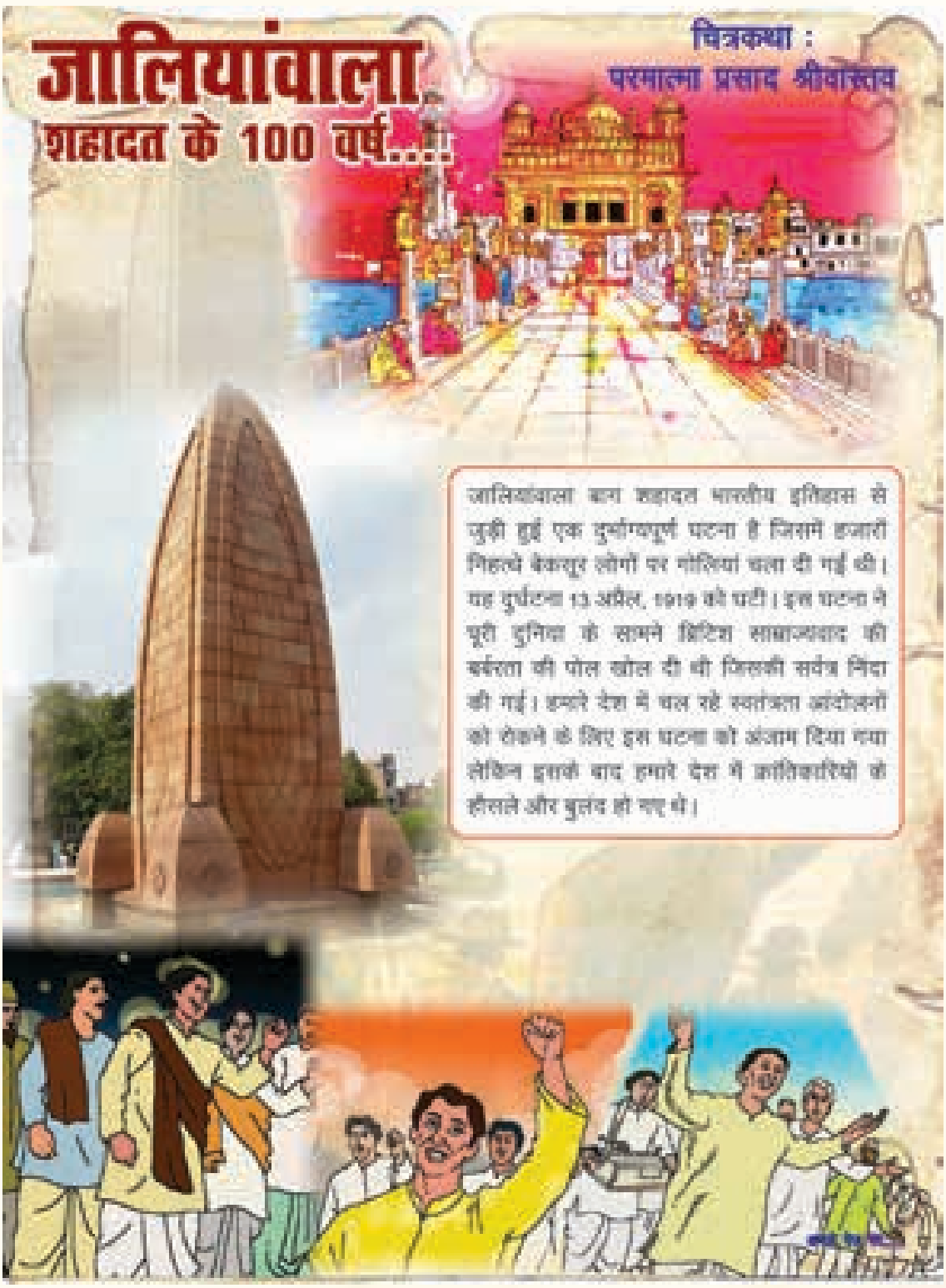

जालियांवाला बाग शहादत भारतीय इतिहास से जुड़ी हुई एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है जिसमें हजारों निहत्थे बेकसूर लोगों पर गोलियां चला दी गई थी। यह दुर्घटना 13 अप्रैल, 1919 को घटी। इस घटना ने पूरी दुनिया के सामने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की बर्बरता की पोल खोल दी थी जिसकी सर्वत्र निंदा की गई। हमारे देश में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलनों को रोकने के लिए इस घटना को अंजाम दिया गया लेकिन इसके बाद हमारे देश में क्रांतिकारियों के हौसले और बुलंद हो गए थे।

प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) में भारतीय नेताओं और जनता ने खुलकर ब्रिटिशों का साथ दिया था। युद्ध समाप्त होने पर भारतीय नेता और जनता ब्रिटिश सरकार से सहयोग और नरमी के रवैये की आशा कर रहे थे परन्तु ब्रिटिश सरकार ने मॉन्टेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधार लागू कर दिए जो इस भावना के विपरीत था।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पंजाब के क्षेत्र में ब्रिटिशों का विरोध कुछ अधिक बढ़ गया था जिसे भारत प्रतिरक्षा विधान (1915) लागू कर के कुचल दिया गया था। उसके बाद 1918 में एक ब्रिटिश जज सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में एक सेडीशन समिति नियुक्त की गई थी जिसकी जिम्मेदारी यह अध्ययन करना था कि भारत में, विशेषकर पंजाब और बंगाल में ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध किन विदेशी शक्तियों की सहायता से हो रहा था।

इस समिति के सुझावों के अनुसार भारत प्रतिरक्षा विधान (1915) का विस्तार कर के भारत में रौलेट एक्ट लागू किया गया था, जो आजादी के लिए चल रहे आंदोलन पर रोक लगाने के लिए था। इसके विरोध में पूरा भारत उठ खड़ा हुआ और देश भर में लोग गिरफ्तारियां दे रहे थे।

गांधी तब तक दक्षिण अफ्रीका से भारत आ चुके थे और धीरे-धीरे उनकी लोकप्रियता बढ़ रही थी। उन्होंने रौलेट एक्ट का विरोध करने का आह्वान किया जिसे कुचलने के लिए ब्रिटिश सरकार ने नेताओं और जनता को रौलेट एक्ट के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया और कड़ी सजाएं दीं। इससे जनता का आक्रोश बढ़ा और लोगों ने रेल और डाक-तार-संचार सेवाओं को बाधित किया। आंदोलन अप्रैल के पहले सप्ताह में अपने चरम पर पहुंच गया था।

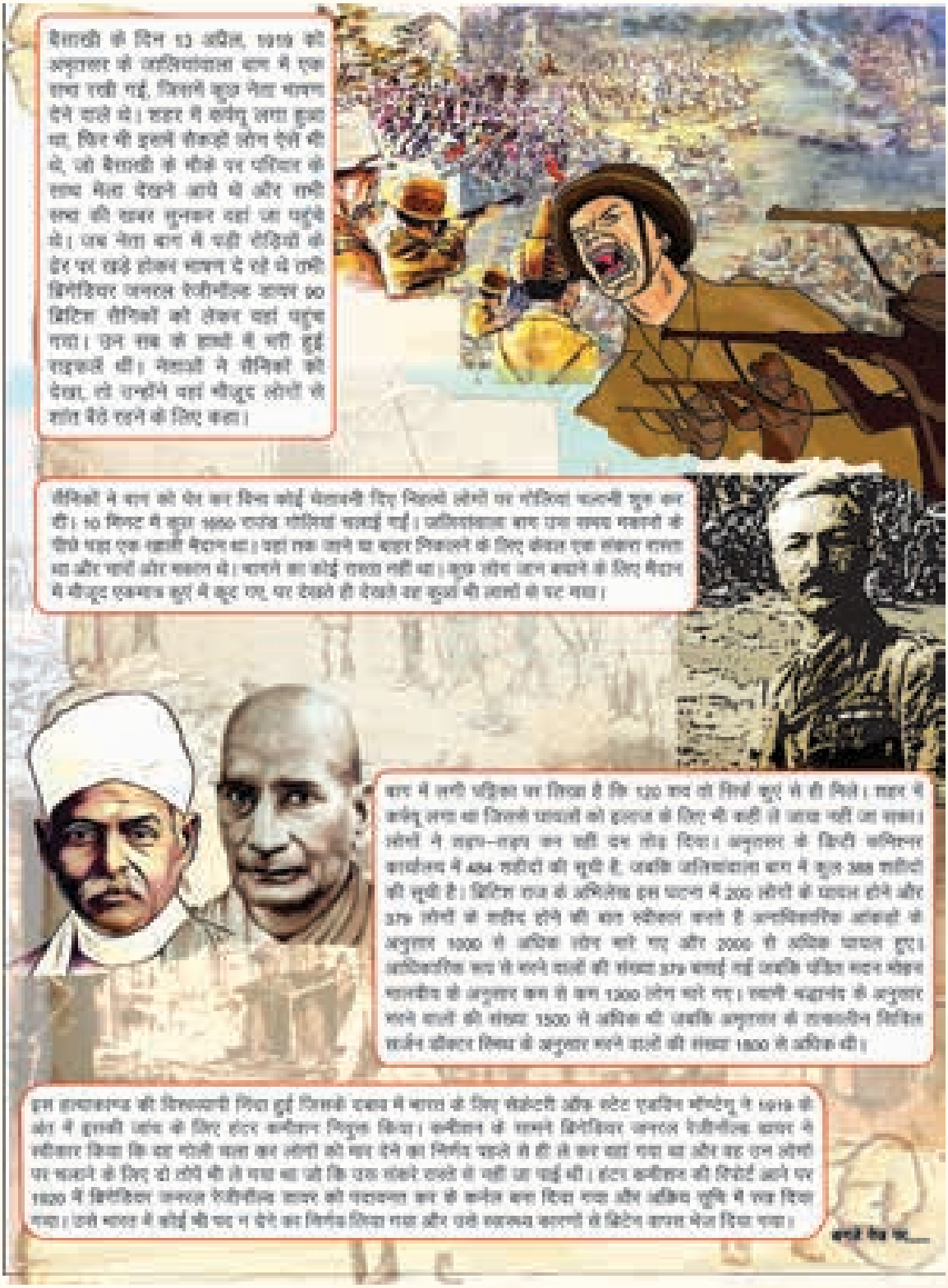

बैसाखी के दिन 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सभा रखी गई, जिसमें कुछ नेता भाषण देने वाले थे। शहर में कर्फ्यू लगा हुआ था, फिर भी इसमें सैकड़ों लोग ऐसे भी थे, जो बैसाखी के मौके पर परिवार के साथ मेला देखने आये थे और सभा की खबर सुनकर वहां जा पहुंचे थे। जब नेता बाग में पड़ी रोड़ियों के ढेर पर खड़े होकर भाषण दे रहे थे तभी ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर 90 ब्रिटिश सैनिकों को लेकर वहां पहुंच गया। उन सब के हाथों में भरी हुई राइफलें थीं। नेताओं ने सैनिकों को देखा, तो उन्होंने वहां मौजूद लोगों से शांत बैठे रहने के लिए कहा।

सैनिकों ने बाग को घेर कर बिना कोई चेतावनी दिए निहत्थे लोगों पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। 10 मिनट में कुल 1650 राउंड गोलियां चलाई गईं। जलियांवाला बाग उस समय मकानों के पीछे पड़ा एक खाली मैदान था। वहां तक जाने या बाहर निकलने के लिए केवल एक संकरा रास्ता था और चारों ओर मकान थे। भागने का कोई रास्ता नहीं था। कुछ लोग जान बचाने के लिए मैदान में मौजूद एकमात्र कुएं में कूद गए, पर देखते ही देखते वह कुआं भी लाशों से पट गया।

बाग में लगी पट्टिका पर लिखा है कि 120 शव तो सिर्फ कुएं से ही मिले। शहर में कर्फ्यू लगा था जिससे घायलों को इलाज के लिए भी कहीं ले जाया नहीं जा सका। लोगों ने तड़प-तड़प कर वहीं दम तोड़ दिया। अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है, जबकि जलियांवाला बाग में कुल 388 शहीदों की सूची है। ब्रिटिश राज के अभिलेख इस घटना में 200 लोगों के घायल होने और 379 लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते है अनाधिकारिक आंकड़ों के अनुसार 1000 से अधिक लोग मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए। आधिकारिक रूप से मरने वालों की संख्या 379 बताई गई जबकि पंडित मदन मोहन मालवीय के अनुसार कम से कम 1300 लोग मारे गए। स्वामी श्रद्धानंद के अनुसार मरने वालों की संख्या 1500 से अधिक थी जबकि अमृतसर के तत्कालीन सिविल सर्जन डॉक्टर स्मिथ के अनुसार मरने वालों की संख्या 1800 से अधिक थी।

इस हत्याकाण्ड की विश्वव्यापी निंदा हुई जिसके दबाव में भारत के लिए सेक्रेटरी ऑफ स्टेट एडविन मॉण्टेगु ने 1919 के अंत में इसकी जांच के लिए हंटर कमीशन नियुक्त किया। कमीशन के सामने ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर ने स्वीकार किया कि वह गोली चला कर लोगों को मार देने का निर्णय पहले से ही ले कर वहां गया था और वह उन लोगों पर चलाने के लिए दो तोपें भी ले गया था जो कि उस संकरे रास्ते से नहीं जा पाई थीं। हंटर कमीशन की रिपोर्ट आने पर 1920 में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर को पदावनत कर के कर्नल बना दिया गया और अक्रिय सूची में रख दिया गया। उसे भारत में कोई भी पद न देने का निर्णय लिया गया और उसे स्वास्थ्य कारणों से ब्रिटेन वापस भेज दिया गया।

बाकी पेज पर...

आज़ादी के लिए लोगों का हौसला ऐसी भयावह घटना के बाद भी पस्त नहीं हुआ। बल्कि सच तो यह है कि इस घटना के बाद आज़ादी हासिल करने की चाहत लोगों में और ज़ोर से उफान मारने लगी। यह खबर पूरे देश में आग की तरह फैल गई। आज़ादी की चाह न केवल पंजाब, बल्कि पूरे देश के बच्चे–बच्चे के सिर चढ़ कर बोलने लगी। उस दौर के हज़ारों भारतीयों ने जलियांवाला बाग की मिट्टी को माथे से लगाकर देश को आज़ाद कराने का दृढ़ संकल्प लिया। इस घटना से पंजाब पूरी तरह से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित हो गया। इसके फलस्वरूप गांधी ने 1920 में असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया।

भारत सरकार द्वारा शहीदों के सम्मान में जारी डाक टिकट।

बुलेट की गोलियां दीवारों और आस-पास की इमारतों में इस समय भी दिखती हैं। जिस कुएं में कई लोग कूद गए और गोलियों से खुद को बचाने की कोशिश कर रहे थे, वह पार्क के अंदर एक संरक्षित स्मारक के रूप में है।

1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा एक प्रस्ताव पारित होने के बाद साइट पर एक स्मारक बनाने के लिए एक ट्रस्ट की स्थापना की गई थी। 1923 में ट्रस्ट ने स्मारक परियोजना के लिए भूमि खरीदी थी। अमेरिकी वास्तुकार बेंजामिन पोल्क द्वारा डिज़ाइन किया गया एक स्मारक, साइट पर बनाया गया और 13 अप्रैल, 1961 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने इसका उद्घाटन किया था।

1997 में महारानी एलिज़ाबेथ ने इस स्मारक पर मृतकों को श्रद्धांजलि दी थी। 2013 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरून भी इस स्मारक पर आए थे। विज़िटर्स बुक में उन्होंने लिखा कि ब्रिटिश इतिहास की यह एक शर्मनाक घटना थी।

इस वर्ष जलियांवाला बाग शहादत के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं देश की वर्तमान पीढ़ी को उन अनाम बलिदानियों की शहादत पर गर्व करते हुए इस देश की एकता, अखण्डता को अक्षुण्ण बनाने के लिए प्रतिबद्ध रहना होगा, जय हिंद... जय भारत...!

विकास के पथ पर

बुद्धिमान होती मशीनें

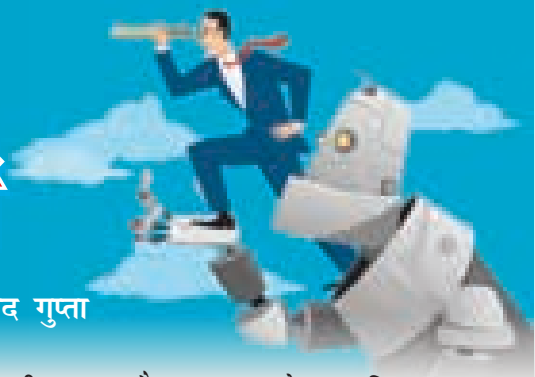

–डॉ. विनोद गुप्ता

आर्टिफिशियल इंटिलिजेंस (एआई) यानी मशीनों को बुद्धिमान बनाना। एआई की तकनीक ने विज्ञान को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। चिकित्सा और हथियार से लेकर विभिन्न शोध तक कई क्षेत्र में एआई की मदद से नया इतिहास रचा जा रहा है।

एआई की तकनीक में हर रोज विस्तार हो रहा है। बात चाहे खबरें पढ़ने वाले *वर्चुअल एंकर* की हो या रेस्तरां में खाना परोसते रोबोटिक वेटर की, एआई ने हर जगह चौंकाया है। सोफिया नाम की एक रोबोट को तो सऊदी की नागरिकता भी मिल गई है। सोफिया ने ना केवल अधिकारियों के सवालों का जवाब दिया, बल्कि नागरिकता मिलने पर किसी समझदार व्यक्ति की तरह धन्यवाद और आभार भी व्यक्त किया। इस तरह की उपलब्धियां एआई की दुनिया की खूबसूरत तस्वीर दिखाती हैं।

समय के साथ-साथ बहुत कुछ बदलता है। यह 21वीं सदी है यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का युग। क्या आप जानते हैं कि यह क्या है और इसकी क्या महत्ता है ?

यह मानव व्यवहार की बुद्धिमत्तापूर्ण नकल करने के लिए मशीन की क्षमता है। इसका उद्देश्य बुद्धिमान मशीनें बनाना है। ऐसी मशीनें जो सोच सकती हैं और काम कर सकती हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कुशल मशीनों के निर्माण से जुड़े कम्प्यूटर विज्ञान का क्षेत्र है।

अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और यूरोपीय संघ भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में काफी पैसा खर्च कर रहे हैं। अमेरिका इस पर सबसे ज्यादा पैसा खर्च कर रहा है।

अब वह दिन दूर नहीं, जब किसी आतंकी को मारने के लिए हमारे जवानों को बंदूक उठाने के बजाय कम्प्यूटर पर एक क्लिक करना होगा।

रक्षा बलों की ताकत बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार ने एक नई परियोजना पर काम शुरू किया है। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर ध्यान दिया गया है। इसके तहत रक्षा बलों को रोबोटिक हथियार, हवाई जहाज, पोत और मानवरहित टैंक आदि उपलब्ध कराए जाएंगे। एक तरह से

कहा जा सकता है कि इस परियोजना से जल, थल और वायु तीनों सेना को भविष्य में होने वाली जंग के लिए तैयार किया जा रहा है, ताकि वे मोर्चे पर अच्छे से लड़ सकें।

सरकार ने सेना के तीनों अंगों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरूआत का निर्णय लिया है, क्योंकि यह भविष्य की जरूरत का अहम क्षेत्र है। एक उच्चस्तरीय कार्यबल परियोजना की बारीकियों एवं संरचना को अंतिम रूप दे रहा है।

आने वाले समय में युद्ध के मोर्चे पर तकनीक का बखूबी इस्तेमाल होने की संभावना है। कुल मिलाकर सरकार हमारी सेना को अगली पीढ़ी के युद्ध के लिए तैयार कर रही है। भविष्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का है हमें *जनरेशन नेक्स्ट* (नई पीढ़ी) के युद्धों के लिए ज्यादा से ज्यादा आधुनिक तकनीकों और ऑटोमेटिक हथियारों की जरूरत होगी, जिसमें रोबोटिक्स की भूमिका अहम होगी। दुनिया के अन्य देशों में एआई पर काम शुरू हो चुका है। भारत इसमें पीछे नहीं रहना चाहता, इसलिए सशस्त्र बलों की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए एआई के उपयोग पर काम शुरू किया गया है। हमारे पड़ोसी चीन ने एआई के बढ़ावे और निवेश के लिए अपने दरवाजे खोल दिए हैं। वह तेजी से सेना में एआई के प्रयोग पर काम कर रहा है।

इस परियोजना में सेना के तीनों अंगों के लिए मानवरहित रक्षा प्रणालियों की व्यापक श्रृंखला का उत्पादन शामिल होगा। दूसरी शीर्ष विश्व सैन्य शक्तियों की तरह ही भारतीय सुरक्षा बल भी अपनी सामरिक तैयारियों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के व्यापक इस्तेमाल पर जोर दे रहे हैं। चीन एवं पाकिस्तान से लगी देश की सीमाओं की निगरानी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल से सशस्त्र बलों पर दबाव महत्वपूर्ण रूप से कम हो सकता है।

चीन में रोबोट डॉक्टरों की कमी को पूरा करने में मदद कर रहे हैं। यहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दम पर लोगों का इलाज भी हो रहा है। इसके पीछे लंबी कवायद है। चीन में अस्पताल में जाना यानी लंबी कतार में खड़ा रहना। चीन की तेजी से बढ़ती आबादी के कारण सारा दबाव हेल्थकेयर सेक्टर पर है और यहां गुआंगजोऊ में एक अस्पताल में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से मरीजों की मदद की जा रही है। गुआंगजोऊ सेकंड प्रोविंशयल सेंट्रल हॉस्पिटल में हर काम में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग कर रहा है। मरीजों की डायग्नोसिस करना, सीटी स्कैन, मरीज का रिकॉर्ड, ऑपरेशन रूम में जो चीजें सप्लाई की जानी है, उन्हें पहुंचाने जैसे काम यहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डॉक्टर कर रहे हैं।

मरीजों के उत्तर के आधार पर तय होता है कि आगे कैसा इलाज करना है। डायग्नोज के मामले में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की *एक्यूरेसी* 90 प्रतिशत तक रही। करीब 200 रोगों की पहचान ये आसानी से कर लेता है। हॉस्पिटल में पहली बार मरीज का फाइल बनाने के लिए *फेशियल रिक्गनिशन* किया जाता है। छोटा-सा वीडियो बनाकर इसका मिलान चीन की नेशनल पब्लिक सिक्योरिटी सिस्टम से किया जाता है।

कुछ दिन पहले चीन में एक टेक्नोलॉजी रिव्यू समिट में यह सवाल उठाया गया था कि अगर कोई एआई डॉक्टर रोग की पहचान करने में गलती कर दे तो इसकी जिम्मेदारी किसकी होगी। हालांकि अब इसका जवाब भी चीन ने दिया है। चीन के एक रोबोट ने हाल ही में मेडिकल लाइसेंस की परीक्षा भी पास कर ली है। चीन का रोबोट दुनिया का पहला रोबोट है, जिसने उक्त परीक्षा पास की है।

चीन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने बड़ा कारनामा करके दिखा दिया है। यहां 7 कोमा मरीजों को डॉक्टरों ने साल भर पहले ब्रेन डेड घोषित कर दिया था। कहा था कि अब इनके होश में आने की कोई संभावना नहीं थी। एआई डॉक्टर की मदद ली गई तो उसने

कहा कि उम्मीद बाकी है। सालभर में मरीज होश में आ सकते हैं। आखिर एआई डॉक्टर ने असल डॉक्टरों को गलत साबित कर दिया। सातों मरीज का सालभर इलाज किया और अब सातों की हालत में सुधार आ गया है। सभी के शरीर में हलचल दिख रही है।

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो के वैज्ञानिकों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की मदद से एक ऐसा एल्गोरिदम विकसित किया है जिससे पांच साल पहले ही यह पता लगाया जा सकेगा कि आपको अल्जाइमर तो नहीं होगा। यानी आपकी सोचने-समझने की क्षमता में कमी तो नहीं आ रही है। अगर ऐसा है तो यह आपको पहले ही अलर्ट कर देगा। इस पद्धति को विकसित करने वालों में से एक भारतीय मूल के मलार चक्रवर्ती भी शामिल हैं।

अभी तक इंसान द्वारा रोबोट का निर्माण किया जाता रहा है, लेकिन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की दिशा में दुनिया में हर दिन नए आविष्कार हो रहे हैं। और अब रोबोट के खुद फैक्ट्री में दूसरे रोबोट्स का निर्माण करने की खबर ने लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया है।

जी हां, स्विटरलैंड की टेक्नोलॉजी कंपनी एबीबी चीन के शंघाई में सबसे उन्नत रोबोटिक्स कारखाना बना रही है। इसमें अत्याधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जाएगा।

एबीबी रोबोटिक 20 साल से ज्यादा समय से ग्लोबल रोबोटिक्स मैन्युफैक्चरिंग पावर हाउस बनी हुई है। एबीबी कोलोबोरेटिव रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रिसर्च और विभिन्न डिजिटल टेक्नोलॉजी जैसे विषयों पर काम कर रही है। फैक्ट्री निर्माण के लिए कंपनी करीब एक हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश कर रही है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक के संभावित दुरुपयोग पर कई वैज्ञानिक चिंता जता चुके हैं, भले ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक का विकास मानवीय जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन लाने को तैयार है लेकिन इसके दुष्परिणामों को लेकर कई वैज्ञानिक और तकनीक विशेषज्ञ एकमत नहीं हैं।

अब एक शोध में दावा किया गया है कि एआई की सुपर इंटेलिजेंस तकनीक इंसानों का वर्चस्व खत्म कर देगी। इंसानों को अपना गुलाम बना लेगी और किसी दिन तबाह भी कर सकती है।

यह दावा शोधकर्ता भौतिक विज्ञानी और एमआईटी (मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) के प्रोफेसर मैक्स टेगमार्क ने किया है।

प्रो. मेक्स ने अपने शोध में पाया कि सभी इंसानों के लिए इस तकनीक को नियंत्रित करना आसान नहीं होगा। लिहाजा इनका विकास सीमित स्तर पर ही किया जाना चाहिए।

अधिकतर विशेषज्ञ मानते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक मनुष्य के लिए जीवन में हर काम आसान कर देगी। कई जगह इसका प्रयोग शुरू भी हो चुका है, लेकिन इसके दूरगामी परिणामों की आशंकाओं को नकारा भी नहीं जा

सोफिया

सकता है। इन उपलब्धियों के साथ ही पैदा हो रहा है एक नया खतरा। खतरा यह कि अगर मशीनें इंसान से ज्यादा बुद्धिमान हो गईं तो क्या होगा? अगर मशीनों ने अपनी बुद्धि के इस्तेमाल से इंसान को बेवकूफ बनाना शुरू कर दिया, तो बचाएगा कौन? महान भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंस ने इन्हीं स्थितियों की कल्पना करते हुए एआई के विस्तार को मानवता के लिए खतरा बताया था। एआई एक ऐसी तकनीक है जिसके अनगिनत नफा-नुकसान हो सकते हैं। इसकी मदद से गंभीर बीमारियों का इलाज खोजा जा सकता है, तो यह चुटकी बजाते ही एक भयानक हथियार बनकर लोगों की जान भी ले सकता है। इसके अच्छे और बुरे दोनों ही इस्तेमाल की कोई सीमा नहीं है। समय-समय पर इसके उदाहरण भी सामने आते रहते हैं।

हाल ही में फेसबुक, अमेजन और गुगल जैसे तकनीकी दिग्गजों ने बिना किसी निर्देश के मानव व्यवहार सीखने में सक्षम रोबोटों का उत्पादन करने के लिए अपनी स्वयं की एआई प्रयोगशालाएं बनाई हैं। एलेक्सा, सिरी कॉर्टाना और कई आभासी सहायक हमारे जीवन को बहुत तेज बनाते हैं। एआई की भविष्य की संभावनाएं स्वचालित परिवहन, स्मार्ट शहरों, गृह रोबोट, विपणन, संगीत, समाचार प्रकाशन और लेखन, स्वास्थ्य देखभाल और ज्ञान के प्रतिनिधित्व में है। यह इंटरनेट का भविष्य है। युवा इसमें करियर बना सकते हैं।

एआई की उभरती धाराएं हैं - कम्प्यूटर विजन, ऑडियो प्रोसेसिंग, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, ज्ञान प्रतिनिधित्व, मशीन लर्निंग, विशेषज्ञ सिस्टम।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कोर्स करने के बाद भविष्य में रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध हो सकते हैं। क्या आप इस कोर्स में प्रवेश पाने की प्रक्रिया जानते हैं?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्षेत्र में काम करने वाली मुख्य कंपनियां हैं- डिपमाइंड, गुगल, फेसबुक, ओपन आई, बाईडु, माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल, आईबीएम, अमेजन आदि।

इस कोर्स में प्रवेश लेने वाले उम्मीदवार को जेईई या समकक्ष योग्यता परीक्षा या एसवीवीवी प्रवेश परीक्षा और रसायन विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी/जीवविज्ञान/तकनीकी व्यावसायिक विषय में से एक के साथ अनिवार्य विषयों के रूप में भौतिकी और गणित के साथ 10+2 परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कोर्स करने के बाद भविष्य में नौकरी के अवसर अनेक हैं, जिनमें प्रमुख हैं- एआई/मशीन लर्निंग रिसर्चर, सॉफ्टवेयर डेवलपर, डेटा वैज्ञानिक, डेटा विश्लेषक, गेम प्रोग्रामर, रोबोट वैज्ञानिक,

सॉफ्टवेयर इंजीनियर, स्वायत्त वाहन बुनियादी ढांचा डिजाइनर, एल्गोरिदम विशेषज्ञ, रोबोटिक उपकरण के साथ काम करने वाले सर्जिकल तकनीशियन, उड़ान सिमुलेटर, ड्रोन और हथियार। विशेषज्ञता प्राप्त करने वाले उच्च वेतन के अधिकारी होंगे। ग्राउंड ब्रेकिंग प्रोजेक्ट्स पर योग्य कर्मचारी एवं अग्रणी विशेषज्ञ बना जा सकता है। ❑

-43/2, सुदामानगर, रामटेकरी, मन्दसौर (म.प्र.)-458001

कहानी

सही राह

–नयन कुमार राठी

ट्रिन...ट्रिन... घंटी की आवाज सुन मम्मी ने दरवाजा खोला, बाहर खाकी रंग कपड़े पहनें एक आदमी ने उन्हें एक लिफाफा थमाया और नमस्कार करके चला गया। मम्मी दरवाजा बंद करके अंदर आई, सोफे पर बैठ लिफाफा खोल उसमें रखा कागज निकाला, जो राघव के स्कूल के प्रधानाचार्य द्वारा भेजा गया था। उसमें लिखा हुआ था–

महोदय आपका पुत्र राघव पिछले दस दिन से स्कूल में अनुपस्थित है। दो दिन वह और अनुपस्थित रहा तो उसका नाम स्कूल से काट दिया जाएगा। पत्र मिलते ही स्कूल आकर मुझसे मिलें। नीचे प्रधानाचार्य के हस्ताक्षर थे।

यह पत्र पढ़कर मम्मी आश्चर्य में पड़ गई, राघव के पापा इस संसार में नहीं थे, बड़ी मुश्किल से जैसे-तैसे कर वह राघव को पढ़ा रही हैं। वह सोचने लगी-राघव रोज स्कूल के समय घर से निकलता है, और शाम स्कूल बंद होने के समय घर पहुंचता है, पिछले दस दिन से वह स्कूल नहीं जा रहा है तो आखिर वह कहां जाता है...? कागज को लिफाफे में रखकर उन्होंने एक तरफ रख दिया और तैयार होकर राघव के स्कूल पहुंची। वह प्रधानाचार्य से मिलने उनके कमरे में गई, वहां राघव के दोस्त माधव के मम्मी-पापा भी उपस्थित थे। उन्होंने माधव के मम्मी-पापा से वहां आने का कारण पूछा तो माधव की मम्मी

बोली- ''पिछले दस दिन से माधव स्कूल नहीं आ रहा है, आज प्रधानाचार्य जी का पत्र मिला। हम मिलने आ गए।'' प्रधानाचार्य ने दोनों की अनुपस्थिति का कारण पूछा तो दोनों के मम्मी-पापा से बोले- ''जाने क्या कारण है, घर से वे स्कूल समय से निकलते है और शाम स्कूल बंद होने के समय घर पहुंचते हैं, इस बीच वे कहां जाते हैं...?'' ''आपको नहीं मालूम।'' प्रधानाचार्य ने पूछा, दोनों के मम्मी-पापा ने हैरत से नहीं में सिर हिला दिया। तब प्रधानाचार्य बोले- ''दोनों लड़कों को रास्ते पर लाने के लिए हमें ऐसा खेल खेलना होगा जिससे सांप भी मर जाए, लाठी भी नहीं टूटे वाली कहावत सही हो जाए और वे नियमित स्कूल आने लगे।'' ''मगर ऐसा कैसे संभव है...?'' राघव की मम्मी ने पूछा, ''उन्हें अपने विश्वास में लेना होगा।'' तब प्रधानाचार्य ने कुछ बातें समझाकर उन्हें विदा किया।

दूसरे दिन राघव स्कूल रवाना होने लगा, मम्मी उसे रोकते हुए बोली- ''बेटा! आज तेरे साथ, मैं भी स्कूल चलूंगी। पिछले दिनों माधव ने मुझे प्रधानाचार्य से मिलने को बोला था, मगर काम में उलझकर मैं तो भूल गई, आज याद आया है। ठहर... मैं तैयार होकर आती हूं,'' मम्मी की बात सुन राघव घबराते हुए बोला ''मगर... मम्मी आज ही क्यों प्रधानाचार्य से मिलना चाहती हैं, फिर कभी मिल लेना मुझे देर हो रही है, मैं जा रहा हूं।'' राघव झट-पट घर से निकल पड़ा। मम्मी दरवाजे पर ताला लगाकर उसके पीछे चल पड़ी, थोड़ी दूर चलने के पश्चात एक सुनसान जगह आकर राघव खड़ा हो गया।

उसके खड़े होने के पांच मिनट पश्चात् माधव आया। वह बहुत घबराया हुआ था, उसे इस तरह देख राघव ने कारण पूछा। माधव ने सारी बात बताई, उसकी बात सुन राघव उदास-सा बोला- ''तेरे जैसा हाल, आज मेरा भी हुआ है, कहीं हम दोनों के मम्मी-पापा को हमारे स्कूल में अनुपस्थित रहने की बात मालूम तो नहीं हो गई।'' राघव की बात सुन माधव घबराते हुए बोला- ''आज हम दोनों मम्मी-पापा को बुद्धू बनाकर निकल आए हैं, मगर ऐसा कब तक चलेगा...? एक न एक दिन तो भांडा फूटेगा?''

उसकी बात सुन राघव उदास-सा बोला- ''अब हम क्या करें...?'' इस पर माधव बोला- ''आज इधर-उधर नहीं भटकते, क्यों न हम स्कूल जाकर प्रधानाचार्य जी को सभी बातें बताकर माफी मांग लें।'' ''अगर प्रधानाचार्य हमें माफ नहीं करेंगे तो? राघव घबराते हुए बोला। इस पर माधव बोला- ''अरे यार डरता क्यों है? ज्यादा से ज्यादा वह हमारी पिटाई करवाएंगे। हम पिटने को तैयार हैं, राघव अपना नाटक समाप्त करो, अपने में हिम्मत भरो, स्कूल चलो।'' पहले तो पिटाई के डर से राघव तैयार नहीं हुआ पर माधव द्वारा समझाने पर बड़ी मुश्किल से राजी हुआ, दोनों स्कूल की ओर बढ़ने लगे। राघव की मम्मी स्कूल पहुंच गई। वहां माधव के मम्मी-पापा भी थे। राघव की मम्मी ने सभी बातें बताईं। पूरी बात सुनने पर प्रधानाचार्य बोले- ''अब आप करीब वाले कमरे में बैठिए और आगे देखिए क्या होता है।''

थोड़े समय पश्चात् राघव और माधव स्कूल पहुंचे। प्रधानाचार्य के कमरे में सभी बातें बताकर माधव बोला- ''आप जो चाहे सजा दें, मगर हम दोनों के स्कूल में अनुपस्थित रहने की बात मम्मी-पापा को नहीं मालूम होनी चाहिए। हम दोनों ने गृहकार्य पूर्ण नहीं किया था और शिक्षक द्वारा अपमानित होने के डर से हम दस

दिन से स्कूल नहीं आ रहे हैं।'' यह बोलते हुए माधव रो पड़ा, उसे देख राघव भी रो पड़ा। दोनों को रोते देख प्रधानाचार्य बनावटी गुस्सा चेहरे पर लाते हुए कड़क आवाज में बोले- ''अब रोने-धोने से काम नहीं बनेगा। तुम्हें कड़ी सजा दी जाएगी,'' उन्होंने चपरासी को आवाज लगाई। और उन्हें करीब वाले कमरे में ले जाकर बंद करने को कहा, चपरासी ने दोनों को बंद कर दिया, कमरे में अंधेरा था। दोनों अंधेरे में अपनी गलती पर पश्चाताप करने लगे। कुछ ही देर में प्रधानाचार्य आए, उन्होंने बटन दबाया बल्ब जल उठा, बल्ब जलते ही राघव-माधव ने अपने मम्मी-पापा को बैठे देखा, पहले तो उसके होश उड़ गए। फिर दोनों दौड़ते हुए उनके करीब पहुंचे और गले मिलकर रोने लगे। तब प्रधानाचार्य हंसते हुए बोले- ''देखो! मैंने जो कहा था, सच हो गया है, उनकी बात सुन राघव की मम्मी बोली- ''सच! इस विद्यालय के विद्यार्थी इतने अनुशासित कैसे रहते हैं, आज आपके व्यवहार से मालूम हो गया।'' उनकी बात सुन माधव बोला- ''सर! आप हमें कड़ी सजा देने वाले थे?'' उसकी बात सुन प्रधानाचार्य बोले- ''सुनो! अगर मैं तुम्हें सजा देता तो आज तुम्हें सजा मिल जाती, पर उससे क्या होता? आगे भी तुम ऐसी गलती करते, आगे का जीवन तुम्हारे लिए अंधकारमय हो जाता, बेटे! अगर इंसान गलती कर, कबूल कर ले, तो उसे माफ किया जा सकता है। अपनी कमियों पर नजर रखो और उनसे उबरो। यही अपेक्षा है तुम दोनों से।'' उनकी बात सुन राघव-माधव उनके चरण स्पर्श करते हुए बोले- ''सर! आगे से हम पढ़ाई में दिल लगाएंगे। आज हमें सही राह मिल गई है। उनकी बात सुन प्रधानाचार्य, राघव और माधव के मम्मी-पापा मुस्कुराने लगे। ❑

-64 उदापुरा, नरसिंह बाजार के पास, इंदौर-452009 (म.प्र.)

उपन्यास अंश

पिंकू के कारनामे

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित यह उपन्यास प्रसिद्ध लेखक कार्लो कालोदी के मूल इतालवी उपन्यास *द एडवेंचर्स ऑफ पिनोकियो* का हिंदी रूपांतर है। पिनोकियो एक कठपुतले की कहानी है। इस उपन्यास का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसका रूपांतर *विश्वनाथ गुप्त* ने *पिंकू के कारनामे* के नाम से बड़ी सहज और सरल भाषा में किया है।

गतांक से आगे...

दियासलाइयां, मेज और कुर्सी, सभी चीजें थीं। इन चीजों के कारण ही मैं दो साल तक रह सका हूं। लेकिन अब *स्टोक* में कुछ भी नहीं बचा है। बस आखिरी मोमबत्ती बची है, वह भी अब खत्म होने वाली है।

...तो इसके बाद हम क्या करेंगे?

...इसके बाद मेरे प्यारे लड़के, हम अंधेरे में रहेंगे।

...तो फिर पिताजी, समय नष्ट नहीं करना चाहिए। हमें बचकर निकलने का कोई उपाय करना चाहिए।

....लेकिन कैसे?

...हमें मछली के मुंह के रास्ते से निकलना चाहिए। समुद्र से फिर हम तैर कर निकल जाएंगे।

...तुम्हारी बात तो ठीक है, पिंकू, लेकिन मैं तैरना नहीं जानता।

...कोई बात नहीं, मैं अच्छा तैराक हूं। आप मेरे कंधों पर चढ़ जाइएगा और मैं आपको मजे से किनारे पर पहुंचा दूंगा।

...यह सब तुम्हारा भ्रम है पिंकू। क्या तुम यह सोचते हो कि तुम्हारे जैसा एक कठपुतला जो सिर्फ एक मीटर ऊंचा है, मुझे अपने कंधों पर बिठाकर तैर सकेगा?

...आप देखते जाइएगा। मैं पूरी कोशिश करूंगा।

इसके बाद एक शब्द भी और न बोलकर पिंकू ने मोमबत्ती उठाई और आगे बढ़ते हुए अपने पिता से कहा- मेरे पीछे-पीछे आ जाइए। डरिए मत।

वे मछली के शरीर में आगे बढ़ते गए। जब वे उस जगह पहुंचे जहां से उस भयानक दैत्य का गला शुरू होता था, तो वे रुक गए। उन्होंने सोचा... अब सबसे बढ़िया मौका देखकर यहां से निकलेंगे।

अब मैं तुम्हें बात दूं कि वह मछली बहुत बूढ़ी थी और उसे सांस की बीमारी थी जिसके कारण उसको मुंह खुला रखकर सोना पड़ता था। पिंकू थोड़ा आगे बढ़ा और जब उसने बाहर की तरफ झांककर देखा, तो उसे आकाश में चमकते हुए चांद-तारे दिखाई पड़े।

...निकलने का यही मौका है। उसने अपने पिता से धीमी आवाज में कहा। व्हेल मछली सो रही है, समुद्र शांत है और चांदनी रात है। इसलिए मेरे पीछे-पीछे आ जाइए।

मछली के मुंह के पास पहुंचकर पिंकू अपने पिता से बोला- मेरे कंधों पर चढ़ जाइए और अपनी बाहों से मेरी गर्दन कसकर पकड़ लीजिए, आगे मैं संभाल लूंगा।

जब गप्पू पिंकू के कंधों पर चढ़कर अच्छी तरह जम गया; तो पिंकू ने एक छलांग लगाई और फिर वह पानी में तैरने लगा। समुद्र तेल के समान चिकना था, चांद चमक रहा था और व्हेल मछली घोड़े बेचकर सो रही थी।

जब पिंकू तेजी से किनारे की तरफ बढ़ रहा था तो उसने देखा कि उसके पिता जो उसके कंधों पर चढ़े हुए थे, जोर-जोर से कांप रहे थे।

वह भय से कांप रहे हैं अथवा ठंड से? पिंकू ने सोचा... हो सकता है दोनों वजह से कांप रहे हों। फिर भी उसने सोचा शायद डर से ही कांप रहे हैं। इसलिए उसने उनको धीरज बंधाते हुए कहा- पिताजी, हिम्मत रखिए। थोड़ी ही देर में हम किनारे पर पहुंच जाएंगे।

...लेकिन किनारा है कहां? उसके पिता ने और भी ज्यादा कांपते हुए पूछा। फिर जिस तरह दर्जी सुई में धागा डालते वक्त आंखें फाड़ते हैं, उसी प्रकार आंखें फाड़कर उन्होंने चारों तरफ देखा। फिर बोले- मैंने तो चारों तरफ देख लिया, लेकिन सिवा आकाश और कुछ दिखाई नहीं पड़ा।

...लेकिन मुझे किनारा साफ-साफ दिखाई पड़ रहा है। आपको मालूम होना चाहिए कि मुझे भी उल्लू की तरह दिन की अपेक्षा रात में अच्छी तरह दिखाई पड़ता है।

लेकिन दरअसल पिंकू खुश होने का नाटक कर रहा था। वास्तव में, वह भी निराश हो रहा था। वह अपना साहस खो रहा था। वह जोर-जोर से सांस ले रहा था। किनारा अभी दूर था।

थोड़ी दूर वह और चला, लेकिन बाद में गप्पू की तरफ मुंह फिरा कर उसने टूटे हुए शब्दों में कहना शुरू किया- पिताजी, मेरी मदद कीजिए। मैं मर रहा हूं।

वे दोनों बाप-बेटे डूबने को ही थे कि उनको सितार की तरह एक महीन आवाज सुनाई पड़ी... कौन मर रहा है।

...मैं और मेरे पिता।

...मैं तुम्हारी आवाज पहचान गई। तुम तो पिंकू हो?

...हां और तुम?

...मैं चुन्नी मछली हूं। तुम्हारी तरह मैं भी वहां कैद थी।

...तो तुम बचकर कैसे निकल आई?

...मैंने तुम्हारा अनुसरण किया। तुमने मुझे रास्ता दिखा दिया और मैं बचकर निकल आई।

...चुन्नी, तुम ठीक समय पर पहुंची हो। कृपा करके हमारी मदद करो।

...बड़ी खुशी से। तुम दोनों मेरी पूंछ पकड़ लो। मैं तुम्हें कुछ ही मिनटों में किनारे पर पहुंचा दूंगी।

कहने की बात नहीं कि गप्पू और पिंकू ने फौरन ही उसको प्रस्ताव मंजूर कर लिया। लेकिन बजाए पूंछ पकड़ने के उन्होंने उसकी पीठ पर बैठना ठीक समझा।

किनारे के पास पहुंचने पर पहले पिंकू उछलकर उतर गया, ताकि वह अपने पिता को उतरने में मदद कर सके। उसके बाद वह चुन्नी की तरफ मुड़कर गद्‌गद् होकर बोला- मेरी अच्छी मित्र चुन्नी, तुमने मेरे पिता की जिंदगी बचाई है। मैं तुम्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूं।

...नहीं, नहीं इसकी कोई जरूरत नहीं। हर एक प्राणी को एक-दूसरे को मदद करनी चाहिए। अच्छा, नमस्ते मैं जाती हूं।... यह कहकर मछली वहां से चली गई।

उस समय तक दिन निकल आया था। पिंकू ने अपने पिता को

अपनी बांह का सहारा देकर कहा. .. पिताजी, मेरी बांह का सहारा लेकर चलिए। हम चींटियों की तरह धीरे-धीरे चलेंगे। थकने पर हम थोड़ी देर विश्राम कर लेंगे।

...हम कहां जाएंगे? -गप्पू ने पूछा।

...हम किसी घर या झोंपड़ी की तलाश करेंगे।

थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर उन्होंने दो बदमाश से दिखने वाले जानवरों को भीख मांगते हुए देखा।

यह वही लोमड़ी और बिल्ली थे, लेकिन अब उनको मुश्किल से पहचाना जा सकता था। बिल्ली जो पहले अंधी बनने का नाटक किया करती थी, अब सचमुच अंधी हो गई थी और लोमड़ी बूढ़ी, कमजोर और घृणित हो गई थी। उसके एक हिस्से को लकवा मार गया था और पूंछ भी नहीं रही थी। अपनी बुरी हरकतों के कारण लोमड़ी अपनी पूंछ बेचने के लिए बाध्य हो गई थी।

...अरे पिंकू! ...लोमड़ी ने कहा- हम दो असहायों को थोड़ी भीख दे दो।

...हां, असहायों को। ...बिल्ली ने हमेशा की तरह दुहराया।

...चलो दूर हटो यहां से दुष्टाओं। तुमने मुझे एक बार बहका दिया था, लेकिन अब मैं तुम्हारे फंदे में आने का नहीं। -पिंकू ने कहा।

...मुझ पर विश्वास करो, पिंकू। इस समय हम गरीब और अभागे हैं। सचमुच अनाथ हैं।

...अगर तुम अनाथ हो, तो फिर ठीक है। तुम इसी के लायक भी थी। कहावत है... चोरी का धन मोरी में जाता है। जाओ दफा हो जाओ यहां से।

यह कहकर पिंकू फिर चुपचाप अपने रास्ते पर चल पड़ा। कुछ दूर और जाने पर उन्होंने एक खेत में पक्की ईंटों से बनी हुई एक झोंपड़ी देखी।

...इस झोंपड़ी में जरूर कोई

रहता है.... पिंकू बोला- हमें वहां चल कर दरवाजा खटखटाना चाहिए।

वे कहां गए और दरवाजा खटखटाने लगे।

...कौन है? ...भीतर से आवाज आई।

एक गरीब बाप और उसका बेटा। पिंकू ने उत्तर दिया।

...चाबी घुमाओ और दरवाजा खुल जाएगा।

पिंकू ने चाबी घुमा कर दरवाजा खोला। अंदर जाकर उन्होंने इधर-उधर देखा, लेकिन वहां कोई नहीं थ।

...अरे भाई, इस झोंपड़ी का मालिक कहां है? पिंकू ने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा।

...मैं यहां हूं, ऊपर।

बाप-बेटे ने नजर उठाकर ऊपर देखा, तो छत की शहतीर पर बातूनी झींगुर बैठा हुआ था।

...ओह बातूनी झींगुर! नमस्ते। ...पिंकू ने उसे पहचान कर अभिवादन किया।

...अच्छा, अब तो तुम इतने प्रेम से बोल रहे हो लेकिन तुम्हें याद है एक बार तुमने काठ का हथौड़ा मेरी तरफ फेंका था। उस समय तुम मुझे अपने घर से निकाल रहे थे।

...तुम ठीक कहते हो झींगुर। मुझे तुम निकाल दो। तुम मेरे ऊपर हथौड़ा फेंक दो लेकिन मेरे पिता के ऊपर तो दया करो।

...मैं तुम दोनों के ऊपर दया करूंगा, लेकिन मैं तुम्हें बुरे बर्ताव को जो तुमने मेरे साथ किया था, याद दिलाना चाहता था। तुम्हें यही बताना चाहता था कि इस दुनिया में जहां तक हो सके, हमें हर आदमी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए क्योंकि समय आने पर हमें भी किसी की मदद की जरूरत पड़ सकती है।

...तुम ठीक कहते हो झींगुर। जो पाठ तुमने मुझे पढ़ाया है, मैं उसे हमेशा ध्यान में रखूंगा। लेकिन यह तो बताओ तुमने इतनी सुंदर झोंपड़ी कैसे बना ली?

...यह झोंपड़ी कल मुझे एक भेड़ ने, जिसकी ऊन सुंदर नीले रंग की थी, दी थी।

...और वह भेड़ अब कहां है?.. पिंकू ने उत्सुकतावश पूछा।

मुझे नहीं मालूम।

...और वह वापस कब आएगी?

वह अब कभी वापस नहीं आएगी। कल बहुत दुखी होकर यहां से गई थी। वह बिलखकर कह रही थी... पिंकू। अब मैं तुम्हें कभी नहीं देख पाऊंगी। अब तो व्हेल मछली ने तुमको खा लिया होगा। हाय! हाय! ❑

–क्रमशः

कार्टून कोना

हास्य एकांकी

यमराज आए ट्रैफिक संभालने

–डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव

पात्र परिचय:

यमराज- ऊंचे सिंहासन पर आसीन। महाराजा की वेशभूषा में भारी-भरकम गहरी रंगत लिए शरीर

चित्रगुप्त- स्वर्ग-नर्क का लेखा रखने वाले प्रमुख अधिकारी (मुकुट लगा धोती आभूषण पहने)

डॉ. कपिल- स्वर्ग में आने वाला डॉक्टर (उम्र 35 वर्ष)

राघव, विवेक, लोकेश- स्वर्ग लोक में आने वाले तीन युवा (उम्र क्रमश: 20, 25, 22 वर्ष)

पंकज सिकरवार- आर.टी.ओ.

दो यमदूत- काले-काले दो बलिष्ठ शरीर धारी व्यक्ति।

प्रथम दृश्य

यमराज और चित्रगुप्त ऊंचे-ऊंचे सिंहासन पर बैठे हुए हैं।

यमराज (एक फाइल देखते हुए, चौंककर) अरे-अरे यह क्या हो रहा है। सब गड़बड़ घोटाला चल रहा है।

चित्रगुप्त - (पूछते हुए) क्यों महाराज! क्या बात हो गई? जो आप एकदम से चौंक पड़े।

यमराज- अब क्यों न चौंकू! गड़बड़ घोटाले मृत्यु-लोक में तो खूब चल रहे हैं। उसकी हवा यहां स्वर्ग-लोक में भी आ पहुंची है।

चित्रगुप्त- महाराज जी, मैं कुछ समझा नहीं। आप तो पहेलियां बुझाने लगे, कुछ साफ-साफ बताइए कहां- गड़बड़ घोटाला है? मैं तो अपनी सारी-फाइलें *अप*-डेट रखता हूं। आप तो जानते हैं बगैर रिकॉर्ड के कोई भी व्यक्ति न तो स्वर्ग में आ सकता है और न नर्क।

यमराज (समझाते हुए)- चित्र

गुप्त जी, मैं आपके रिकॉर्ड में गड़बड़ी की बात नहीं कर रहा। मैं तो यह देख रहा हूं कि यह पृथ्वी वाले खूब गड़बड़ी कर रहे हैं। मौज-मस्ती खुद करते हैं और बाद में लापरवाही के कारण बैमौत मर जाते हैं, इन्हें सुधारने की बहुत बड़ी जरूरत है।

चित्रगुप्त (हामी भरती हुए) हां महाराज, यह बात तो आप सोलह आना सही फरमा रहे हैं।

यमराज- अब देखो। आपको पता है। लोग पिछले-सालों के रिकॉर्ड की तुलना में कुछ ज्यादा ही स्वर्ग-नर्क में आ रहे हैं। ज्यादातर लोग ट्रैफिक-व्यवस्था के कारण आ रहे हैं।

चित्रगुप्त- हां महाराज, आप बिल्कुल सही हैं। ज्यादातर लोग सड़क दुर्घटनाओं, रेल-दुर्घटनाओं में ही मारे गए हैं। कुछ ऐसे लोग भी ज्यादा हैं जो स्वयं लापरवाही से दुपहिया वाहन चलाने के कारण यहां आए हैं।

यमराज- (गंभीर होकर) चित्रगुप्त जी, कुछ उपाय करिए कि पृथ्वी से यहां आने वालों की संख्या कम हो सके। इतनी *स्पीड* रही तो यहां स्वर्ग की व्यवस्था ही चौपट हो जाएगी।

चित्रगुप्त- महाराज! यही तो मैं सोच रहा हूं। लोग अपनी पूरी उम्र बिताकर यहां आएं तो-तो ठीक है पर सड़क पर *एक्सीडेंट* के कारण कुछ ज्यादा ही लोग यहां पहुंचने लगे हैं। बेवक्त आते हैं तो फाइल वर्क बढ़ जाता है और उनके कर्मों का लेखा-जोखा दुबारा 'एडजस्ट' करना पड़ता है। काम बढ़ने से कमर दुखने लगी है मेरी।

यमराज- अब चित्रगुप्त जी! तुम तो जानते हो। हमने पृथ्वी लोक में कितनी ढेर-सारी सुविधाएं दे रखी हैं- एक से एक बढ़िया कार, बाईक हैं। कंप्यूटर, लेपटॉप, मोबाइल, टेबलेट हैं। बढ़िया-बढ़िया सिनेमाघर हैं। ढेर-सारी धन, खाने-पीने की सामग्री दौलत लोगों के पास है। खूब इस्तेमाल करें। मौज-मस्ती से रहें।

चित्रगुप्त (गंभीर होकर) महाराज! लोगों के जल्दी-जल्दी बेवक्त आने से हमें भी अपना रिकॉर्ड रखने में सावधानी रखनी पड़ती है। इतने-सारे रजिस्टर्स भर गए हैं और अलमारियां भी रिकॉर्ड से भर गईं हैं। सोच रहा हूं- कुछ नए रजिस्टर तैयार किए जाएं।

यमराज (समझाते हुए) चित्रगुप्त जी! आप अभी तक पुराने *सिस्टम* से चल रहे हैं। कुछ नया *सिस्टम* लागू कीजिए। हम जब पृथ्वीलोक पर चलेंगे तो स्वर्ग-नर्क में आने वालों का रिकॉर्ड रखने के लिए दो-चार कंप्यूटर और लैपटॉप लेते आएंगे।

चित्रगुप्त- वाह, वाह महाराज! आपका दिमाग भी क्या खूब है। बिल्कुल कंप्यूटर की तरह चलता है। मैंने तो सोचा ही नहीं था। जब पृथ्वीलोक के निवासी कंप्यूटर रख सकते हैं तो हम क्यों नहीं? आप कंप्यूटर ट्रेनिंग की व्यवस्था भी करा दीजिए।

द्वितीय-दृश्य

यमराज और चित्रगुप्त अपने-अपने ऊंचे-ऊंचे सिंहासन पर एक-दूसरे के करीब बैठे हुए हैं।

यमराज- यह तो सब ठीक है। पर सबसे पहले आज स्वर्ग में आने वाले लोगों को मेरे सामने प्रस्तुत किया जाए। यमदूतों को जल्दी बुलाइए- वे लोगों को लेकर जल्दी आएं।

चित्रगुप्त- जी, यमराज जी! मैंने यमदूतों को *एसएमएस* कर दिया है। वे जल्दी ही यहां आने वाले हैं। तभी सामने से दो यमदूत डॉक्टर कपिल को रस्सी से बांध कर लाते हैं। लीजिए, यमदूत आ गए।

चित्रगुप्त- महाराज! ये डॉ. कपिल महोदय हैं, जो मृत्युलोक में अपनी डॉक्टरी से अब तक सौ

लोगों को मार चुके हैं। आज खुद अपनी बाईक ट्रक से भिड़ा दी। आधा घंटे में इनके प्राण निकल गए और ये यहां आ पहुंचे।

यमराज (कुछ सोचते हुए) अच्छा! तो यह जनाब समय से पूर्व यहां पधारे हैं। ढंग से सड़क पर बाईक नहीं चला सकते।

चित्रगुप्त- महाराज जी, यह डॉक्टर साहब सिर्फ बाईक ही नहीं चला रहे थे कानों में *इयरफोन* लगाए थे- फिल्मी गाने सुनने के लिए। इन्हें संगीत का कुछ ज्यादा ही शौक है।

यमराज- संगीत का शौक तो मुझे भी है- पर मैं चाहे जब संगीत का आनंद नहीं लेता।

चित्रगुप्त- महाराज जी, गाने तो मैं भी सुनता हूं। पर मुझे पुरानी-फिल्मों के गाने ही ज्यादा पसंद हैं। अबकि बार पृथ्वी-लोक जाना हुआ तो कुछ मनपसंद गाने अपने मोबाइल में *डाउनलोड* करवा लाऊंगा।

यमराज- ये तो ठीक है चित्रगुप्त जी। पर आपने जो हाल डॉ. कपिल का बताया-आज लाखों लोग पृथ्वी लोक में कानों में इयरफोन लगाए *ड्राईव* करते हैं। उन्हें सड़क पर गाने-सुनने और मोबाइल पर बात करने का शौक चर्राया है।

चित्रगुप्त (हामी भरते हुए) आप सही कह रहे हैं। पर यमराज जी, यह शौक बहुत भारी पड़ जाता है। लोग कुछ समझते ही नहीं। आज तभी तो ट्रैफिक दुर्घटनाओं के कारण मरने वालों की संख्या बढ़ती ही चली जा रही है।

यमराज (चिंतित होकर) मुझे तो यह समझ में नहीं आ रहा कि हमारे पृथ्वी-लोक पर लोगों को तमाम-सुविधाएं दे रखी हैं। बड़ी-बड़ी बिल्डिंग बनाकर लोग रह रहे हैं। लोगों पर ढेर-सारा रुपया-पैसा है- ढेर सारा सोना-चांदी है। कुछ लोग तो ऊपरी कमाई से करोड़पति और अरबपति बनते चले जा रहे हैं। मगर यहां स्वर्ग-लोक में बड़े-बड़े करोड़पति भी जब चाहे तब चले आ रहे हैं।

चित्रगुप्त जी- आप बिल्कुल सही कह रहे हैं।

महाराज, आज की तारीख में तीन-नौजवान भी बेवक्त स्वर्ग-लोक आ गए हैं। कहें तो उन्हें भी आपके सामने प्रस्तुत करवाऊं।

यमराज- हां भाई, उन्हें भी सामने लाओ। ये लोग इतनी जल्दी यहां क्यों आ गए। अभी कुछ दिन पृथ्वी-लोक में ही मौज-मस्ती करते।

चित्रगुप्त- महाराज ये तीनों लड़के हमेशा 80-100 की स्पीड से बाईक चलाते थे। बाईक चलाना तो फिर भी ठीक है। पर बाईक पर स्टंट करते हुए चलते थे। बस! खा गए गच्चा। बाईक सहित तीनों गहरी खाई में गिर गए।

यमराज- मैं समझ गया- ये लोग ट्रैफिक नियमों का मजाक उड़ा रहे थे। जो इस प्रकार की लापरवाही करेगा- उसे तो मरना ही पड़ेगा।

चित्रगुप्त- महाराज, कल के सामाचार पत्र में आपने पढ़ा होगा कि एक वीआईपी ने सोते हुए मजदूरों पर अपनी गाड़ी चढ़ा दी। बेचारे गरीब मारे गए।

यमराज (सोचते हुए) मुझे लगता है- पृथ्वी लोक की ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने के लिए हम लोगों को ही पृथ्वी-लोक चलना पड़ेगा। कुछ दिन वहीं रहेंगे। तब कुछ सुधार होगा।

चित्रगुप्त- हां यमराज जी, हम लोगों को ही कुछ ऐसा करना पड़ेगा। अबकि बार जब पृथ्वी से चार-पांच कंप्यूटरर्स लाने का पैसा भी विभाग से पहले ही स्वीकृत कराना होगा।

यमराज- हां, चित्रगुप्त जी, नियमानुसार ही सब कार्य उचित है।

चित्रगुप्त- महाराज, एक बात तो हम बनाना भूल ही गए।

यमराज- कौन-सी बात? वही की कमर दर्द की शिकायत हो रही है। कुछ विटामिंस वगैरह लेते रहिए।

चित्रगुप्त- यमराज जी, अबकि बार एक आरटीओ महोदय भी अपनी पूरी फैमिली सहित समय से पहले यहां आ गए हैं।

यमराज (चौंककर) क्या कहा। आरटीओ वही न जो पृथ्वी-लोक में यातायात व्यवस्था संभालते हैं।

चित्रगुप्त-हां, महाराज बिल्कुल वहीं, इनका नाम है। पंकज सिकरवार- इन्होंने फोर व्हीलर से परिवार को घुमाने का प्रोग्राम बना लिया था। दस-बीस किलोमीटर ही गाड़ी चला पाए कि एक ट्रक में जोरदार टक्कर मार दी।

यमराज- टक्कर में कोई बचा या नहीं।

चित्रगुप्त- नहीं यमराज जी, टक्कर जोरदार थी। स्पॉट पर ही परिवार के चारों-लोग मारे गए। पति-पत्नी और दो बच्चे।

यमराज (चिंतित दुखी होकर) यह तो बड़े दुख की बात है। आरटीओ की उम्र भी तो कम लगती है।

चित्रगुप्त (समझाने के अंदाज में) हां महाराज, आरटीओ अभी सिर्फ पैंतीस साल का था। ये सब चक्कर महाराज, गाड़ी में मोबाइल से बातचीत करने से हुआ। ऐसा मालूम चला कि आरटीओ जनाब एक हाथ से गाड़ी चला रहे थे और हाथ में मोबाइल लिए थे।

यमराज- लोगों को अब अपने प्राणों से मोह नहीं रहा। कुछ न कुछ गड़बड़ करते ही रहते हैं। बिना मौत के भी मौत को आमंत्रण देते हैं और बाद में घरवालों को ताउम्र इस दुख को झेलना पड़ता है।

चित्रगुप्त- महाराज, आप कह रहे थे कि बुधवार को मुझे याद दिला देना। बुधवार को पृथ्वीलोक की ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने चलेंगे। आज बुधवार है।

यमराज- तो फिर! देर किस बात की, हम लोग पृथ्वी-लोक पर चलते हैं।

चित्रगुप्त- चलिए यमराज जी।

चित्रगुप्त जी और यमराज पृथ्वीलोक आ जाते हैं। ❑

-एस-1, नित्यानंद विला, कमलेश्वर कॉलोनी, जीवाजी गंज, लपूकर, ग्वालियर-474001 (म.प्र.)

शनल किसी से कम नहीं

–चित्रलेखा अग्रवाल

शनल ने आज दादाजी से 'म्यूजिकल बर्ड बुक' की फरमाइश कर दी और दो घंटे के अंदर लाने का अल्टीमेटम भी दे दिया। दादाजी ने अपना चश्मा लगाया और कोने में खड़ी होने की सजा पाई अपनी छड़ी उठाकर चल दिए अपनी दुलारी शनल की फरमाइश वाली बुक खरीदने।

दादा जी के जाने के बाद शनल की आंखें बराबर गेट की तरफ लगी रहीं- दादा जी न जाने कब प्रकट हो जाएं मेरी मनपसंद 'म्यूजिकल बर्ड बुक' लेकर। वह टॉयलेट भी नहीं गई। ऐसा न हो कि इधर शनल जाए और उधर रूबल दादा जी से उसकी पसंद की बुक झपट ले। रूबल हमेशा शनल की चीजों पर आंखें गड़ाए रहता है। इसीलिए इस बार शनल रूबल की तरफ से सतर्क थी।

डेढ़ घंटे बाद दादाजी मुंह लटकाए लौट आए। शनल का मन बुझ गया, शायद नहीं मिली। नहीं तो दादाजी का चेहरा फूल सा खिला होता। दादा जी ने शनल को दिलासा दी–शनल मेरी बिटिया रानी दो दिन बाद मिल जाएगी तुम्हारी मनचाही मनभाई 'म्यूजिकल बर्ड बुक'। तब तक इस पुस्तक से काम चलाओ और मन बहलाओ''–कहकर दादा जी ने बैग से एक पुस्तक निकालकर शनल को दी। शनल ने उसे देखा तक नहीं और जाकर बिस्तर पर उल्टी पड़ गई। तब तक बिजली की सी तेजी से रूबल ने पुस्तक दादाजी से झपट ली और दादी मां के कमरे में उड़न छू हो गया।

ऐसा हमेशा ही होता था कि दादा जी शनल की पसंद की चीजें न मिलने का बहाना बना देते थे। रूबल दादा जी की योजना समझ जाता था कि दादा जी शनल को खिजाने और रूबल को शनल की चीजें पहले देने के लिए शनल से चीज न मिलने का बहाना बना देते हैं।

शनल भी रूबल के पीछे-पीछे दादी मां के कमरे में दौड़ गई पर तब तक रूबल दादी मां के पलंग के नीचे घुस गया और दादी मां पलंग पर डबलबैड की चादर लटका कर रूबल को छुपा चुकी थीं। दादी मां ने रूबल को अपनी आंखों का तारा बना रखा था। वह भी हर चीज दादा जी की तरह पहले रूबल को ही देती थीं और रूबल शनल को जीभ निकालकर चिढ़ाता हुआ भाग जाता था।

जैसे ही दादी मां ने शनल को अपनी चौखट पर कदम रखते हुए देखा उन्होंने शनल को कमरे के

बाहर ही रोक दिया- ''क्यों री शन्नो! हर समय मेरे बच्चे के पीछे पड़ी रहती है। तुझसे छोटा है। जरा देर देखकर दे देगा। पर भैया तो तुझे फूटी आंख भी नहीं सुहाता।''

शनल बड़बड़ाई ''वह छोटा है तो क्या मैं बड़ी हूं। उसे मेरा कहना मानना चाहिए।'' दादी मां और दादा जी रूबल से क्यों नहीं कहते कि शनल तेरी दीदी है। जैसे अपने खिलौनों से पहले तू खेलता है वैसे ही अपनी चीजें छूने का पहला हक तेरी दीदी का है। पर बहुत सिर चढ़ा रखा है दोनों ने रूबल को।

मम्मी ने शनल को परेशान देखा तो पास आकर समझाया–''दादा जी और दादी मां के पक्षपात पर मत जा मेरी गुड़िया। रूबल लड़का है इसीलिए वे दोनों उसे सिर-माथे पर लेते हैं। तो क्या? मैं और तेरे पापा तो बेटे-बेटी दोनों को एक आंख से देखते हैं। इस घर में तुम पहले आई तो तुम्हारे लिए हमारे मन में प्यार का कोटा ज्यादा है। रूबल के इस घर में आने के बाद मेरा और तेरे पापा का प्यार तेरे लिए बढ़ा ही है क्योंकि दादाजी और दादी मां के हिस्से का प्यार भी हम तुम्हें करते हैं।''

खुश होकर शनल अपनी सहेली गुड्डी के साथ पार्क में खेलने चली गई। पार्क में दोनों फूलों पर मंडराती तितलियों के पीछे दौड़ने लगीं। रात होने लगी थी, तारे झिलझिला रहे थे। गुड्डी शनल का हाथ पकड़कर दौड़ती हुई अपने घर आई। गुड्डी की मम्मी पूजा कर रही थीं। मीठे पुए रखे हुए थे। गुड्डी मम्मी के गले में बाहें डालकर झूलते हुए बोली-''मां, तारे निकल आए हैं। जल्दी से पूजा करके पूए मुझे और शनल को दो।

तभी मम्मी ने शनल को आवाज दी–''शनल आ। यहां भी पूए तैयार हैं।'' पुओं का नाम सुनते ही रूबल के मुंह में पानी आ गया। वह 'म्यूजिकल बर्ड बुक' छोड़कर रसोईघर में आ गया। हवा से भी तेज आकर शनल ने अपनी बर्ड बुक ले ली। शनल और गुड्डी बुक में पक्षियों और जानवरों की बोलियां सुनने लगीं। वे जिस भी पक्षी और जानवर वाला पेज दबातीं, उससे उसी पक्षी और जानवर की आवाज आने लगतीं। मम्मी की योजना काम कर गई। मम्मी हर बार नई तरकीब से शनल को रूबल से उसकी चीज दिलवा देती हैं।

दादी मां ने मम्मी को डांटा-''पुष्पा तुमने अभी तक पुओं का घोल भी नहीं घोला। किताब शन्नो को दिलाने के लिए तुमने यह ड्रामा रच दिया। शन्नो लड़की है। उसे ज्यादा सिर मत चढ़ाओ।''

मम्मी बेटी-बेटे में कोई फर्क नहीं करती थीं। शनल और रूबल में जिसकी भी गलती होती थी उसे ही समझाती और डांटती थी जबकि दादी मां हमेशा ही शनल को डांटती थीं। शनल की चीजें झपटने के लिए रूबल आंसू बहाने लगता था। तब दादी मां शनल पर नाराज हो जाती थीं–''तुमसे छोटा है। उसे दे क्यों नहीं देती। खा थोड़े ही जाएगा, खेलकर दे देगा।''

एक दिन दादी मां और मां को छत पर देखकर शनल और रूबल भी ऊपर छत पर आ गए। रूबल शनल से उसकी गुड़िया छीनकर आगे-आगे भाग रहा था और शनल बार-बार अपनी गुड़िया लेने के लिए रूबल के पीछे दौड़ रही थी। रूबल गुड़िया की पोनी टेल पकड़कर झुलाता हुआ कह रहा था 'ले अपनी नकचपटी मुटल्लो को ले।' शनल को डर था कि रूबल कहीं उसकी गुड़िया को उछालकर छत से नीचे न गिरा दे। गुड़िया को तब कितनी चोटें आएगीं–सोचकर शनल की आंखों में आंसू आ गए।

मां ने रूबल से शनल को गुड़िया देने के लिए कहा। दादी मां ने फिर भी डांट की खुराक शनल को ही पिलायी–''क्यों री शन्नो, मेरा बच्चा तेरी गुड़िया को खा जाएगा क्या? जरा देर खेलकर दे देगा तो तेरा क्या घिस जाएगा?''

शनल रूआंसी होकर बोली–''दादी मां रूबल मुझे अपनी चीजों की तरफ देखने तक नहीं देता और मेरी चीजों से पहले रूबल खेलता है और फिर तोड़-फोड़कर मुझे दे देता है। आप मुझे हमेशा सब्र का उपदेश देती रहती हो। अगर मेरी गुड़िया को कुछ हो गया तो?''

रूबल गुड़िया को बॉल की तरह हवा में उछालने लगा। गुड़िया कभी रूबल के हाथ में आ जाती तो कभी जमीन पर गिर जाती। जमीन पर गिर-गिरकर गुड़िया की ड्रेस मैली हो गई। उसके रेशमी सुनहरे बाल उलझकर बर्तन मांजने वाला जूना बन गए। शनल ने गुड़िया को लेना चाहा। रूबल ने उसे दूसरी तरफ धकेल दिया और गुड़िया को नीचे फेंक दिया। शनल ने गुड़िया को पकड़ना चाहा। शनल गुड़िया को पकड़ न पाए की कोशिश में रूबल ने शनल के पैर में अपना पैर अड़ा दिया। शनल ने गुड़िया को लपक तो लिया पर संतुलन खराब होने से एकाएक वह छत से नीचे आंगन में गिर बेहोश हो गई और उसके माथे से खून बहने लगा।

अब मां, दादी मां और रूबल सभी तेजी से नीचे आए। शनल को उठाकर पलंग पर लिटाया। गुड़िया को खरोंच तक नहीं आई थी। गुड़िया शनल के हाथ में सुरक्षित थी। मां ने एंबुलेंस बुलाकर शनल को अस्पताल में भर्ती कराया। शनल का खून काफी बह चुका था। इलाज के बाद शनल को धीरे-धीरे होश आने लगा। वह बड़बड़ाई-''दादी मां मैंने गुड़िया को नीचे नहीं गिरने दिया बिल्कुल भी।''

पापा भी अस्पताल पहुंच गए थे। वह आते ही दादी मां पर दनदनाए ''मां देख लिया आपने अपने और पिताजी के पक्षपात का नतीजा। आप रूबल को सिर चढ़ाती रहीं और शनल को नकारती रही। आपने कभी यह नहीं सोचा कि शनल भी आपकी ही पोती है। यदि आपने दोनों को एक आंख से देखा होता तो आज ये अनर्थ न हुआ होता।''

दादी मां स्वयं ही शर्मिंदा थीं। तभी गुड्डी की मम्मी सपरिवार शनल के लिए जूस लेकर आईं। उन्होंने भी शनल के पापा की बात को सही बताते हुए दादी मां को समझाया लड़कियां और लड़के अलग-अलग नहीं होते।''

गुड्डी की मम्मी सांस लेने को रूकीं तो गुड्डी के दादा जी ने गुड्डी की मम्मी की बात का समर्थन किया-''भाभी जी जरा सोचिए कि रूबल जैसे-जैसे बड़ा होता जाएगा, उसके जिद्दी और स्वार्थीपन के कारण कौन उसे पसंद करेगा। वह सिर्फ लेना जानता है देना और बांटना नहीं। जीवन में बिना मिल-जुल कैसे रहेगा। बिल्कुल अकेला पड़ जाएगा, तब कौन साथ देगा इसका।''

अब दादी मां को भी पछतावा हो रहा था कि लड़के-लड़की में अंतर करके मैंने रूबल की आदतें बिगाड़ दी हैं। रूबल और ज्यादा जिद्दी होता जा रहा है। शनल उससे बड़ी है फिर भी रूबल अपनी गलती होते हुए भी उसे डांट देता है। शनल मम्मी-पापा से उसकी शिकायत करे तो मैं भी रूबल का पक्ष लेकर उनको चुप कर देती हूं।

दादा जी चुपचाप प्यार से शनल का माथा सहला रहे थे। पापा दादी मां और दादा जी दोनों में शनल के प्रति प्रेम का उमड़ता सागर देखकर बेहद खुश थे। सब शनल को अस्पताल से घर ले आए। घर में अब दोनों से समान व्यवहार होता था, वे अब प्रतिस्पर्धी नहीं मित्र बन रहे थे। ❑

-610, रॉयल टावर, शिप्रासन सिटी इन्दिरा पुरम, गाजियाबाद उ.प्र.

बेटियां

–आचार्य कुमार शक्तिवेश

दौलत के तराजू से मत तोल बेटियां,
आशीष विश्वमात का अनमोल बेटियां।
ईश्वर भी जिनके सामने नत हो गया कभी,
ऐसा रत्न अमोल हैं भारत की बेटियां।
घर आये चरण इसके पधारीं स्वयं लक्ष्मी,
गौरी, शची, मेघा का रूप हैं स्वरूप बेटियां।
शिक्षित बनाओ इनको,
देखो फिर करती हैं क्या कमाल।
ब्रह्माण्ड झुकाएंगी कल्पना सी बेटियां।
गीता कि अनीता हो मैरी कॉम या सानिया।
भारत के ध्वज का मान बढ़ाएंगी बेटियां
सीता सी सहनशक्ति है, सावित्री सा संकल्प,
भागेंगे तानाशाह जब आएंगी बेटियां।
सुभद्रा, महादेवी, बनके काव्य रचेंगी।
बन अमृता अमृत भी पिलाएंगी बेटियां।
हो युद्ध या कि शांति ये आदिशक्ति हैं।
दुश्मन को दिन में तारे दिखाएंगी बेटियां।

दिलशाद कालोनी, नई दिल्ली

दुनिया हमारे आस-पास

नए तरह की कृत्रिम पत्तियां

वैज्ञानिकों ने ऐसी कृत्रिम पत्तियां बनाई हैं जो प्राकृतिक पौधों की तुलना में वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड को दस गुना अधिक कुशलता से ईंधन में परिवर्तित करती हैं। वैज्ञानिकों में भारतीय मूल के लोग भी शामिल हैं। ये कृत्रिम पत्तियां भी प्राकृतिक प्रक्रिया के तरह ही अपना काम करती हैं जिसके अनुरूप ये पौधे सूर्य से ऊर्जा, हवा से कार्बन डाइऑक्साइड और जल ग्रहण कर प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया से कार्बोहाइड्रेट का निर्माण करते हैं। इलिनोइस विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर मीनेश सिंह के अनुसार अब तक लैब में दबावयुक्त टैंकों से कार्बन डाइऑक्साइड का उपयोग कर कृत्रिम पत्तियों के सभी डिजाइनों का परीक्षण किया गया है।

दुनिया हरी-भरी बनाने में भारत, चीन सबसे आगे

भारत और चीन पेड़-पौधे लगाने और कृषि आधारित अपने महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों की बदौलत धरती को हरा-भरा बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। यह जानकारी पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे नासा के दो उपग्रहों के एक उपकरण द्वारा लगभग 20 साल तक रिकॉर्ड किए गए डेटा से मिली है, जिसे मॉडरेट रिजोल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोरेडियोमीटर कहा जाता है। 'नेचर सस्टेनेबिलिटी' के हालिया संस्करण में प्रकाशित रपट के अनुसार, 20 साल पहले की तुलना में विश्व वास्तव में अधिक हरियाली की ओर बढ़ रहा है। रिपोर्ट से पता चला है कि 2000 के दशक के शुरुआती दौर में वैश्विक रूप से चीन में हरियाली का विस्तार कम से कम 25 प्रतिशत हुआ और भारत भी लगभग इसके करीब था। नासा के उपग्रहों की इस आश्चर्यजनक खोज से पता चला कि दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले यह दो देश पेड़ लगाने और कृषि आधारित महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों के जरिए इस दिशा में काफी आगे बढ़ रहे हैं।

भूपर्पटी के नीचे बड़े पर्वत

वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की ऊपरी सतह (भूपर्पटी) के नीचे के हिस्से मैंटल में बड़े पर्वतों का पता लगाया है। इस जानकारी के मिलने से अब पृथ्वी के निर्माण के बारे में हमारी अब तक की समझ में बदलाव आ सकता है। ज्यादातर स्कूली बच्चे ये जानते हैं कि पृथ्वी की तीन परते हैं- भूपर्पटी (क्रस्ट), मैंटल और कोर। कोर अंदरूनी और बाहरी, दो भागों में बंटा हुआ है। स्कूलों में छात्रों को दी जा रही इस जानकारी में कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन इसमें पृथ्वी के भीतर की कई अन्य ऐसी परतों के बारे में नहीं बताया जाता जिनकी पहचान वैज्ञानिकों ने की है। *साइंस* नाम की एक पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक, वैज्ञानिकों ने धरती की सतह से 660 किलोमीटर नीचे ऊपरी और निचले मैंटल को अलग करने वाली एक परत पर पर्वतों और अन्य संरचना का पता लगाने के लिए बोलीविया में आए भूकंप के आंकड़ों का इस्तेमाल किया। इस परत के लिए एक औपचारिक नाम के अभाव में शोधार्थियों ने इसे '660 किलोमीटर सीमा' का नाम दिया है।

50 प्रतिशत महासागरों का रंग बदलेगा

एमआईटी के अध्ययन में पाया गया है कि दुनिया के 50 फीसदी से अधिक महासागरों का रंग जलवायु परिवर्तन के कारण वर्ष 2100 तक बदल जाएगा। नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित इस अध्ययन के अनुसार जलवायु परिवर्तन से दुनिया के महासागरों के सूक्ष्म पादपों में अहम बदलाव हो रहे हैं और आने वाले दशकों में इस बदलावों का महासागर के रंग पर असर पड़ेगा तथा उसके नीले और हरित क्षेत्र तेज होंगे। इस अध्ययन के मुताबिक उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में नीले क्षेत्र और नीले होंगे जो आज की तुलना में कम सूक्ष्म पादप का परिचायक होगा। आज जो कुछ हरित क्षेत्र हैं वे और हरित होंगे, क्योंकि अधिक उष्मा से विविध सूक्ष्म पादप का और विस्तार होगा।

(विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं से संकलित)

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

शीर्षक : हरी-भरी पृथ्वी

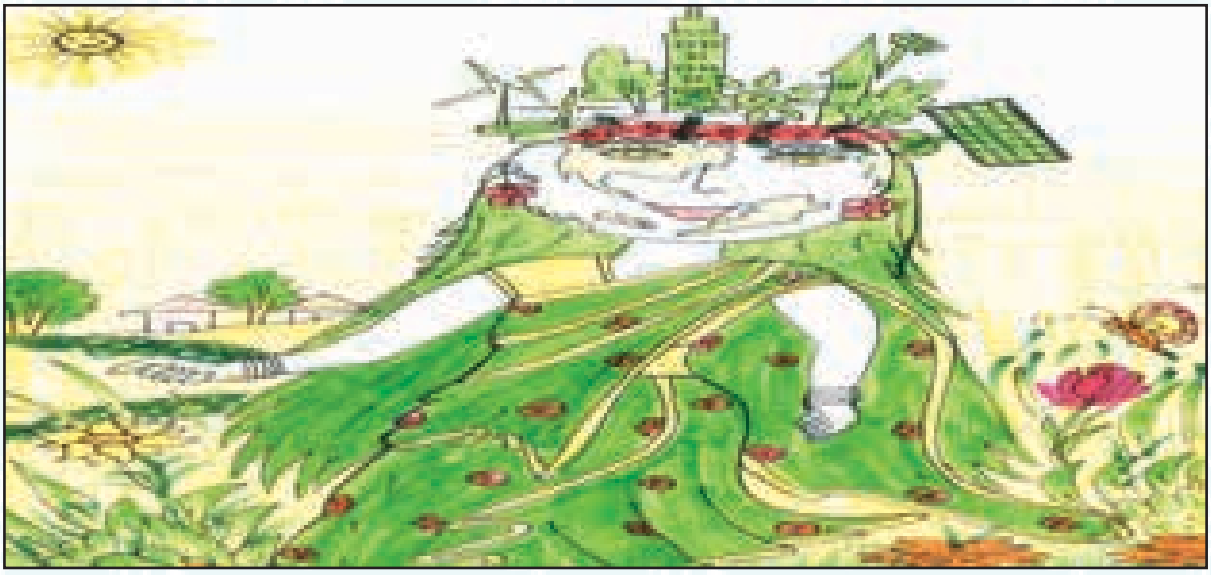

विजेता – कुमकुम राघव, शान्ती मौहल्ला, गांधी नगर, दिल्ली-31 (इन्हें एक वर्ष तक बाल भारती मुफ्त भेजी जाएगी)

अदिति, ए.पी.एस. स्कूल, अमृतसर

प्रल्लव प्रसाद, आर्मी पब्लिक स्कूल, अमृतसर

हेमांग बरणा, उदयपुर रोड, बांसवाडा, राजस्थान

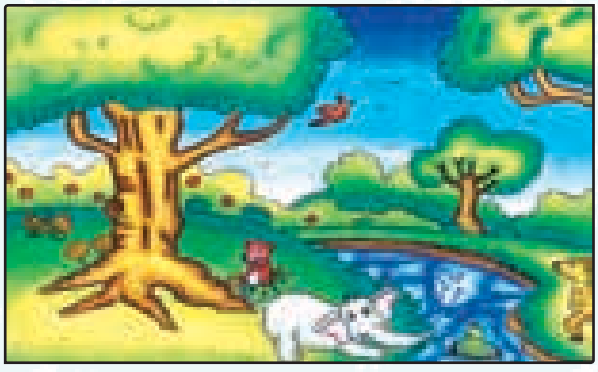

युवराज सिंह ठाकुर, 70-बी, श्रीनिवास सरदार वल्लभ भाई पटेल मेमोरियल हाई स्कूल, गुलबर्ग, कर्नाटक-585101

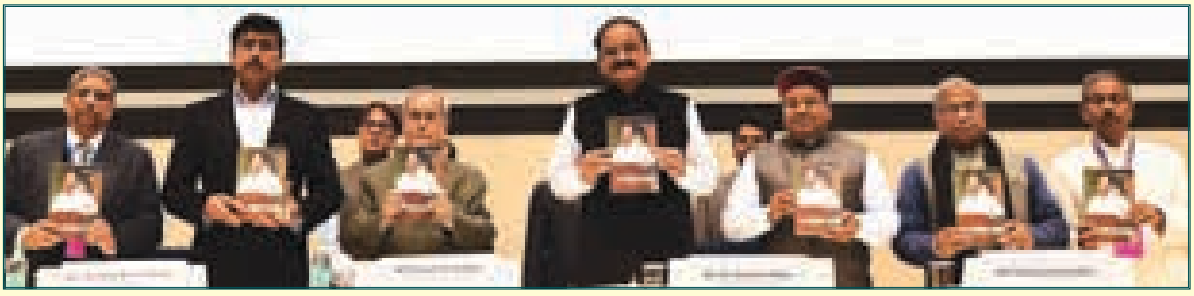

माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडु के चुनिंदा भाषणों के संकलन की पुस्तक का लोकार्पण

ekuuh; iol jk"Vªifr Jh i.kc eq[kthZ us 15 Qjojh] 2019 dks ubZ fnYYkh esa ekuuh; mijk"Vªifr Jh ,e- osadS;k uk;Mq ds Hkk"k.kksa ds ladyu dh iqLrd ^lsysfDVM Lihfpt& okWY;we&1* dk yksdkiZ.k fd;kA bl volj ij ekuuh; mijk"Vªifr] ekuuh; dsanzh; lkekftd U;k; vkSj vf/kdkfjrk ea=h Jh FkkojpUn xgyksr] ekuuh; ;qok ekeys vkSj [ksy o lwpuk vkSj izlkj.k jkT;ea=h ¼Lora= izHkkj½ duZy jkT;o/kZu jkBkSM vkSj vU; x.kekU; O;fDr ekStwn FksA

माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडु की गरिमामयी उपस्थिति में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित उनके चुनिंदा भाषणों पर आधारित पुस्तक सेलेक्टिड स्पीचिज़– वॉल्यूम–1 का भारत रत्न तथा पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने 15 फरवरी, 2019 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक कार्यक्रम में लोकार्पण किया। इस मौके पर माननीय केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री श्री थावरचन्द गेहलोत, माननीय युवा मामले और खेल एवं सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कर्नल राज्यवर्धन राठौड़, राज्यसभा के माननीय उपसभापति श्री हरिवंश, उपराष्ट्रपति के सचिव डॉ. आई. वी. सुब्बा राव, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के सचिव श्री अमित खरे सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने पुलवामा आतंकवादी हमले में शहीद हुए सीआरपीएफ के जवानों की याद में मौन भी रखा।

इस अवसर पर उपराष्ट्रपति ने पुस्तक का लोकार्पण सुनिश्चित करने हेतु लगन से कार्य करने के लिए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय और प्रकाशन विभाग को बधाई दी। उन्होंने कहा ''मैं आप सभी को इस पुस्तक के बारे में संक्षिप्त में बताना चाहता हूं, जो मेरी मौजूदा भूमिका के पहले साल के दौरान मेरे मिशन से जुड़ी है। संक्षेप में कहें तो यह सभी हितधारकों की अंतरात्मा को जागृत करने का एक ईमानदार प्रयास है, ताकि वे आत्मनिरीक्षण कर देश को नए क्षितिज पर ले जाने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग कर सकें। युवा भारत अपने भविष्य को पारिभाषित और हासिल करने का प्रयास कर रहा है और ऐसे में हमारे अतीत का स्मरण कर और वर्तमान को प्रतिबिंबित कर मैंने इस दिशा में गंभीर प्रयास किया है।'' श्री नायडु ने देश और विभिन्न संस्थाओं से संबंधित कई मुद्दों पर विस्तार से बात की। साथ ही, उन्होंने अतीत के आधार पर लोगों को बेहतर भविष्य बनाने के लिए एकजुट प्रयास करने की जरूरत और वर्तमान समस्याओं से असरदार ढंग से निपटने पर भी बल दिया।

माननीय पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने श्री एम. वेंकैया नायडु के साथ अपने लंबी अवधि के संबंधों को याद किया और पुस्तक के लोकार्पण के लिए माननीय उपराष्ट्रपति को बधाई दी। उन्होंने कहा, 'श्री नायडु द्वारा दिए गए भाषण सार्वजनिक जीवन में उनके समृद्ध अनुभव, भारत के भविष्य के लिए उनके विज़न और आकांक्षाओं व अपेक्षाओं और उम्मीदों को दर्शाते हैं। बेहतरीन डिजाइन और साज–सज्जा के साथ पुस्तक की प्रस्तुति के लिए उन्होंने सूचना और प्रसारण मंत्रालय को बधाई भी दी। साथ ही, श्री मुखर्जी ने कहा कि उनके राष्ट्रपति पद पर रहने के दौरान प्रकाशन विभाग ने राष्ट्रपति भवन के विभिन्न पहलुओं पर 13 से भी ज्यादा विश्वस्तरीय पुस्तकें प्रकाशित कीं। उन्होंने प्रकाशन विभाग को उनके विशेषज्ञतापूर्ण और अग्रगामी कार्य के लिए बधाई दी।

इस अवसर पर माननीय सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री श्री राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा, ''मैंने उपराष्ट्रपति के साथ काम किया है और यह बेहद सम्मान की बात है। उनका विवेक, बुद्धि और विज़न सब कुछ उन भाषणों में प्रतिबिंबित होता है, जिन्हें अब पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।'' उन्होंने यह भी कहा कि आज के युग में युवा पीढ़ी इन पुस्तकों को आसान प्रारूप में पढ़ सके, इसीलिए ये सभी पुस्तकें ऑनलाइन, रिटेल और ई–संस्करण में उपलब्ध कराई जा रही हैं।

इस पुस्तक में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडु के 92 भाषणों का संकलन है, जिन्हें छह श्रेणियों में बांटा गया है– फंकशनिंग ऑफ लेजिसलेचर्स (विधायिका की कार्यप्रणाली), नेशन एंड नेशनलिज़्म (राष्ट्र और राष्ट्रवाद), पॉलिटी एंड गर्वनेंस (सरकारी–तंत्र और शासन), इकोनॉमिक डेवेलपमेंट (आर्थिक विकास), मीडिया (मीडिया), इंडिया एंड द वर्ल्ड (भारत और विश्व)। यह पुस्तक प्रकाशन विभाग दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में उपलब्ध है। यह पुस्तक www.bharatkosh.gov.in पर भी ऑनलाइन उपलब्ध है। इस पुस्तक का ई–संस्करण एमेजॉन और गूगल प्ले पर उपलब्ध है। ❑

वार्षिक मूल्य : ₹ 160
आर एन आई 699/57
डाक रजिस्टर्ड सं. डी एल (एस) – 05/3214/2018-20
बिना पूर्व भुगतान के साथ आर.एम.एस.
दिल्ली से पोस्ट करने के लिए लाइसेंस यू (डी एन)-51/2018-20
08 मार्च, 2019 को प्रकाशित • 18-19 मार्च 2019 को डाक द्वारा जारी

RNI 699/57
Postal Regd. No. DL (S) - 05/3214/2018-20
Licenced U (DN) - 51/2018-20
to post without pre-payment at RMS Delhi

प्रकाशक व मुद्रक : डॉ. साधना राउत, महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
मुद्रक : **इंडिया ऑफसेट प्रैस,** ए-1, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली। संपादक : आभा गौड़